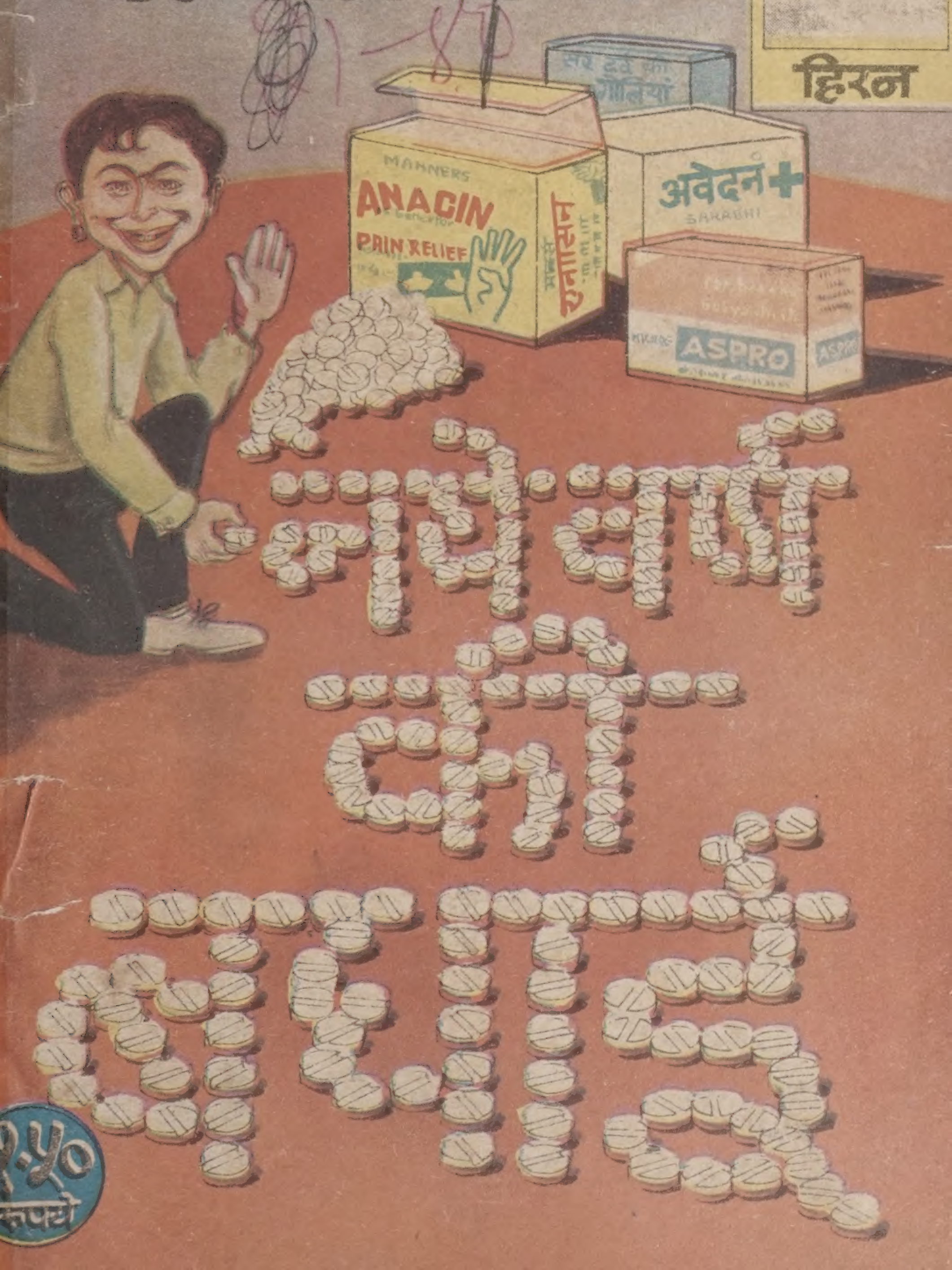
दीवाना

मुफ्त पोस्टर

हिरन




पंचतंत्र
क्यों बे खरगोश, मैं कब से चाकू और छुरी प्लेट पर बजा रहा हूं और अब तक कोई जानवर मेरे भोजन के लिये क्यों नहीं आया ? आज किसकी बारी थी ?
हजूर एक समस्या आन पड़ी है। इस
में एक और शेर आ गया है और कह
है जंगल का राजा वह है आप नहीं
उसके पास तो आइडेंटिटी कार्ड भी है।
कहां है वह दूसरा शेर ? दिखाओ।
अभी कुछ देर पहले इसी कुंये में था वह. और धड़ाधड़ सरकारी अध्यादेश जारी करे जा रहा था। ज़रा गौर से देखिये अभी भी इसी कुंये में होगा।
इस कुंये में ? देखता हूं।
झूठे खरगोश, इस कुंयें में तो कोई नज़र
आता। मुझे बेवकूफ बना रहा था। अ
तुझे अपने पेट के कुंये में डालता हूं।
तेरी यमदूत से इंट्रोडक्शन कराई जाये
उस खगरोग की मौत आई थी जो चालाकी दिखाने चला था। था मोटा ताजा। पेट भर गया।
बस यही एक वजह है। हमें अपनी रिपोर्ट जंगल के जानवरे
सामने रखनी चाहिये। जब खरगोश शेर को कुंआं दिखाने बु
गया होगा इसी बीच मलेरिया विभाग वालों ने आकर कुंयें में
का तेल डाल दिया होगा। मिट्टी के तेल के कारण ही शेर को अ
परछाई नहीं दिखाई दी और खरगोश मारा गया।
अभी तक
मिट्टी का तेल
तैर रहा है
अपोजीशन
जांच कमेटी
सार—सरकारी विभाग वाले उसी वक्त काम बिगाड़ जाते हैं जब उनकी ज़रूरत नहीं होती, मौके पर कभी दर्शन नहीं देते।

दीवाना

अंक: 1 वर्ष: 17 1 जनवरी 1981

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा	:	३५ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	१८ रुपये
एक प्रति	:	१.५० रुपये

मुख्य पृष्ठ पर

तुम सब दीवानों को
नये वर्ष की बधाई
कुछ तो समझ गये पर
कुछ की समझ न आई
सिर दर्दी और गमों से
बड़ा आसान छुटकारा
हंसो और हंसाओ
यही हमारा नारा।

आगामी अंक में

परेड ऐसी भी होती

२६ जनवरी दिल्ली वालों के लिये

विभिन्न राज्यों की कुछ यथार्थवादी झलकियां

मुफ्त पोस्टर बन्दर

आपके पत्र

दीवाना का अंक १८ पढ़ा, पढ़ कर दिल में हंसी की फुलझड़ियाँ छूटने लगीं। धारावाहिक कहानी चमकती आँख और तीन जासूस बहुत ही रोचक है। मोहम्मद अली का पोस्टर पा कर बहुत खुशी हुई।

—सुरेन्दर खुराना मोंगा (पंजाब)

दीवाना अंक १८ मिला। पंचतन्त्र, धंधा पाकेटमारी का, मोटू पतलू, सिलबिल पिलपिल तथा मोहम्मद अली का पोस्टर बहुत पसन्द आये। मेरा पत्र 'आपस की बातें' में चुन लिया गया, इससे मुझे बुहद खुशी हुई। सुनील गवास्कर का पोस्टर देने की कृपा करें। **—विपिन संसल, (जयपुर)**

आपकी फरमाइश का ध्यान रक्खा जायुगा **जाएगा। —सं**

दीवाना का अंक हमेशा की तरह अपनी विशेषताओं को लिये हुए था। मोटू पतलू, फैन्टम, काका के कारतूस और आपस की बातें बहुत रोचक थे। इस अंक में हमें बहुत से कार्टून मिले जो बहुत अच्छे लगे।

—जय भगवान भारद्वाज, (रिवाड़ी)

मैं दीवाना तेज का पुराना ग्राहक हूँ, एवं सन् १९६८ से इसे पढ़ता आ रहा हूँ। इसका अंक १८ मुझे बहुत ही अच्छा लगा मोहम्मद अली का पोस्टर तथा उन के जीवन की रोचक घटनायें पढ़ कर मन खुशी से झूम उठा। आगे भी ऐसे ही रंगीन पोस्टर छापा करें। दीवाना के सभी लेख अत्यन्त रोचक होते हैं।

साथ ही मैं आपकी एक गलती की ओर ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा, मुख्य पृष्ठ पर 'दिवाना तेज साप्ताहिक' के स्थान पर दीवाना तेज पाक्षिक छापा करें। धन्यवाद।

—गांधी राम (बुलन्दशहर)

चींटियों द्वारा कठिन परीक्षा

प्राचीन काल में कठिन परीक्षाऐं बहुत ही अनोखे ढंग से ली जाती थीं। इन सब में सबसे अधिक विषम तथा अनोखी चींटीं परीक्षा थी, ये परीक्षा अमरीका के आधुनिकरण होने से पहले वहां बहुत प्रचलित थी।

मनोरंजक बात ये है कि हर जाति के लोग इसे भिन्न भिन्न कार्यों की परीक्षा के हेतु काम में लाते थे।

इस परीक्षा में शिकार को काटने वाली चींटियों की पहाड़ी पर लिटा दिया जाता था। उत्तरी अमरीका के रुकूयन जाति के लोग इस परीक्षा को धार्मिक व्रत ग्रहण करने वाले लड़कों पर लागू करते थे और इसी प्रकार की परीक्षा उत्तरी अमेजोन के टूपीज तथा केलिफोरनिया के लुइसेनो जाति के लोग भी लेते हैं।

दक्षिणी अमरीका के स्पालिवास के मुखिया को पद ग्रहण करने पर इस परीक्षा का सामना करना पड़ता था। गुइयाना के अरावाक जाति के लोग शोक के समय इस परीक्षा को लेते थे तथा अन्य जातियों में इस परीक्षा को शिकारी का धार्मिक कार्य समझ करते थे।

घातक ज्वालामुखी द्वारा रक्षित

सारा शहर एक विशेष भयानक दृष्य को देखने की प्रतीक्षा कर रहा था, नीटो लुई सिपरिस का खुलेआम फाँसी पर चढ़ाया जाना। परन्तु भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। सिपरिस के फांसी लगाये जाने से कुछ घंटों पहले सारा शहर नष्ट हो गया, केवल सिपरिस ही बचा।

एक सफ़ेद चमड़ी वाले गोरे को सेंट पियारे के डाक पर चाकू से मारने के अपराध में फांसी की सजा पाये हुए, वेस्ट इन्डीज़ के मारटीनीक टापू पर सिपरिस जेल की एक छोटी सी कोठरी में बन्द था।

शहर एक शान्त ज्वालामुखी के क़रीब स्थित था। हफ्तों तक पहाड़ में गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी और शहर पर राख की वर्षा हो रही थी। विशेषज्ञों के अनुसार ये एक गुजरता काल था, परन्तु पीला पहाड़ अत्यन्त सक्रिय हो उठा।

फिर ८ मई को सन् १९०२ के दिन सूर्य काले भाप के धुऐं के बादलों के पीछे अचानक छुप गया और पहाड़ से एक भयंकर आग का गोला सौ गज का बड़ा छेद बना कर निकला।

गैस, बहुत अधिक गर्म भाप, बड़े-बड़े पहाड़ के पत्थर तथा लावे से सेंट पियारे ढक गया। लगभग ३०,००० व्यक्ति मारे गये। सिपरिस अपने पत्थर की कोठरी द्वारा रक्षित तीन दिन बाद बचाया गया, वह पूरे शहर का अकेला जीवित व्यक्ति था। उसने इसके बाद एक सर्कस कम्पनी के साथ सारे अमरीका का दौरा किया, वह अपनी जेल की कोठरी नुमा, सेल में बैठ कर घूमता था, वह सन् १९२९ नक जीवित रहा।

जैटकार

एक हजार किलोमीटर प्रति घंटे से भी अधिक गति से पृथ्वी पर भागने वाली जैट कार का निर्माण हो रहा है। अगले वर्ष इस की गति से पिछले सब गति रिकार्डों को तोड़े जाने की संभावना है।

यह नया प्रायास जिस में १,००२ किलोमीटर प्रति घंटे से चलने वाली जैट कार बनाने का लक्ष्य है एक अमरीकन व्यापारी श्री गैरी गैबलिच्स का सपना है। इसे पूरा करने के लिये ब्रिटिश टीम जिसके नेता ३४ वर्षीय रिचर्ड नोबेल हैं, के छः वर्ष तक अथक परिश्रम का परिणाम होगा। लगभग अगले वर्ष श्री नोबेल ही इस कार को चलायेंगे।

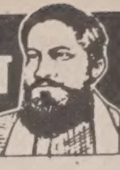
अभी तक इस कार का पहला प्रदर्शन करने के लिये कोई स्थान नियत नहीं किया जा सका है। मि० नोबेल पच्चीस सम्भावित स्थानों का निरीक्षण कर रहे हैं। संभवतः नवम्बर माह तक स्थान का अंतिम चुनाव हो जायेगा।

इस कार में जिसका नाम थ्रस्ट-॥ रक्खा गया है ऊर्जा रोल्स रायस के एवन जैट ईंजनों से ली गई है इनमें दुबारा गर्म होने की क्षमता भी है। इस कार का ईंजन एक बिजली के समान तेज़ लड़ाकू विमान से लिया गया है।

मि० नोबेल ने जनता के सामने इस कार का प्रदर्शन 'हम एयर पोर्ट' बर्न साउथ दक्षिणी इंगलैंड पर कई बार क्रम से चला कर किया था


आदिम युग
अब मानव जाति का सर्वनाश निकट है। जंगल में एक ऐसी चीज ने जन्म लिया है जो प्यार, ईमान, शर्म, हया सब कुछ समाप्त कर देगी। मानव जाति के लिये इससे बड़ा खतरा और कोई नहीं हो सकता।
बाबा पैट्रोकैमिक कलानद
क्या किसी जंगली वैज्ञानिक के हाथ एटम बम का फार्मूला लग गया है?
हरिओऽम्
मैं साफ-साफ अनुमान नहीं लगा पाया कि उसका आकार क्या है? मेरी जादू की छड़ी बता रही है कि वह चीज इसी तरफ है। शायद उस सामने वाली गुफा की तरफ इशारा कर रही है। कौन रहता है इस गुफा में?
यह गुफा तो हथौड़ा नन्द का है। पिछले साल तो वही था इस गुफा में। अगर उसे DDA का फ्लैट एलॉट हुआ हो तो पता नहीं.
वह देखो, यही चीज है मानव जाति के लिये सबसे भयंकर विनाशकारी वस्तु, ठीक सामने रखी है।
तुम दो इस तरह आंखें फाड़ कर क्या देख रहे हो? कल ही मेरे दिमाग में आइडिया आया कि आदमी के बैठने के लिये कुछ बनाया जाये। मैंने लकड़ियां जोड़ कर यह चीज़ बना दी इसका नाम मैंने कुर्सी रखा है।

काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के: उत्तर काका हाथरसी के

किशोर भाटा, रिवाड़ी

प्र० : काकाजी, हमको तुमसे प्यार हो गया है, क्या करें?

उ० : भाटा-भट्टी से निकल, ठंडे दिल से घूम।
आजा बेटे हाथरस, लेंगे तुझको चूम।।

मोहम्मद शकील, गु० ते० बहादुर नगर

प्र० : आपके कारतूसों में कौन-कौन तत्त्व हैं?

उ० : हास्य व्यंग्य का आजकल, सब से अधिक महत्त्व।
भांति-भांति के भरे हैं, कारतूस में तत्त्व।।

नारायण सचदेव, इंदौर (म० प्र०)

प्र० : क्या प्रमाण है इस बात का कि आपकी दाढ़ी असली है?

उ० : पकड़ खींच कर देख लो, असली है या नक्ल।
आ जाएगी ठिकाने, तुरंत आपकी अक्ल।।

सैयद अब्दुल जब्बार, बीकानेर

प्र० : काकाजी, आप अपने रुपए-पैसे कहां रखते हैं?

उ० : गुप्त भेद के भेदिया, फेंक रहे हो डोर।
मालुम होता आपके दिल में बैठा चोर।

प्रेमबाबू शर्मा, बगीचीपीरजी, दिल्ली

प्र० : अगर किसी दुबले-पतले की शादी मोटी से हो जाय तो वह बेचारा क्या कहेगा?

उ० : दो क्विंटल से कम नहीं, तौल सके तो तौल।
लिखी हमारे भाग्य में, यह कैसी जंगी फुटबौल?

मनोज कुमार, चंडीगढ़

प्र० : हमको भी कारतूस बनाना सिखा दोगे क्या?

उ० : लेने के देने पड़ें, मत करना यह खेल।
मिस्टर 'मीसा' पकड़ लें, हो जाएगी जेल।।

सुभाषचन्द्र गुप्ता, भगवानपुरा, बुलन्दशहर

प्र० : मुहब्बत की पहिली सीढ़ी पर ख़तरा रहता है या उसके बाद?

उ० : पहिली सीढ़ी पर अगर पहुंच गई है टांग।
आगे कुछ ख़तरा नहीं, मारो लम्ब छलांग।।

कैलाशचन्द्र जोशी, कुनकुनी (रायगढ़)

प्र० : दीवाना में 'काकी के कारतूस' क्यों नहीं छपते?

उ० : काका कवि, कविता करें, काकी रहती मौ
यदि वे भी लिखने लगें, हमको पूछे कौन

रवीमनकुमार मोटवानी, बैरागढ़ (भोपाल)

प्र० : औरत और घड़ी में क्या फ़र्क होता है?

उ० : टिकटिक करती है घड़ी, नहीं चलाती होंठ
झिकझिक करती औरतें, जीभ मारती चोट।

कमलकान्त जैन, माडल टाउन, दिल्ली-९

प्र० : आपकी नज़र में गुरु बड़ा है या ईश्वर?

उ० : गुरु-ईश्वर या देवता व्यर्थ हो गए आज।
कलियुग में सब से बड़े, मिनिस्टर्र महाराज।

मुरारीलाल जिन्दल, कुनकुरी

प्र० : बिजली चली जाती है तब अंधेरा हो जाता है पत्नी चली जाय तब?

उ० : बिजली गुम हो जाय तो, हर्ज नहीं कुछ खास
पत्नी जाती मायके, आय प्रेमिका पास।।

सुनीतारानी, लारेंस रोड (दिल्ली)

प्र० : काका, क्या आप प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दे हैं?

उ० : जो सवाल अश्लील हो, देते उसको फाड़।
लेखकजी को मारते, काका एक लताड़।।

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)

प्र० : जिन्हें हम भूलना चाहें, वे अक्सर याद आ हैं?

उ० : याद का स्वाद मिट जाता, वो उसके बाद आ हैं।

सुरिन्द्र अरोड़ा, मण्डी डब्बाली

प्र० : महबूबा से प्यार करनेवाले को कौन छुड़ा सकता है?

उ० : गुल से लिपटी हुई तितली को छुड़ाकर देखो
आंधियों! तुमने दरख़्तों को उखाड़ा होगा।

दीपक कुमार 'अमित' सिरसा (हिसार)

प्र० : कहते हैं, वहम का कोई इलाज नहीं, आपका तजुर्बा?

उ० : दिल में आता रहम जब, वहम अधिक हो जाय।
काकी घड़ा टटोलती, जब थाली खो जाय।।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश



हा हा हा

● दो अभिनेता एक अभिनेत्री के बारे में बात कर रहे थे। एक कह रहा था, 'कल सुबह जब मैं सैर को जा रहा था तो रास्ते में वह दूसरी ओर से अपने कुत्ते के साथ आती हुई मिली। मैंने उसे देख सीटी बजाई।'

'उसने क्या किया !' दूसरे ने पूछा।

पहला बोला, 'वह मुझे इस तरह अन-देखा कर पास से गुजर गयी जैसे मैं बिजली का खंभा होऊं। लेकिन उसके कुत्ते ने ऐसा नहीं किया……।'

● बाक्सिग मैच हो रहा था। एक बॉक्सर बुरी तरह पिट रहा था। घण्टी बजने पर वह अपने कोने में आया तो पस्त होकर स्टूल पर बैठ गया। उसके ट्रेनर ने ढाढस बंधाया, 'तुम अब भी उसे पीट सकते हो। बस जरा हिम्मत रखो। अपने आप से यह कहते रहो कि मैं इसे पीट सकता हूं। मैं पीट सकता हूं दिल ही दिल में इसे दोहराते रहो।'

बॉक्सर ने लम्बी सांस छोड़ी, 'क्या फायदा ? मैं जानता हूं कि मैं कितना झूठ बोलता हूं।'

● एक क्रिकेट अम्पायर अपनी पत्नी को टैस्ट मैच में ले गया। एक एलबी डब्ल्यू निर्णय पर हंगामा मचा। दर्शकों ने अम्पायर को खूब हूटिंग की। शाम को घर आने पर अम्पायर अपनी बीबी से बोला, 'कल से तुम टैस्ट मैच देखने खुद न आना। मेरे निर्णयों पर लोग हूटिंग करेंगे तो तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा। आज भी जब तुम्हारे चारों तरफ के दर्शक खड़े हो कर मुझे हूट कर रहे थे तो तुम्हें बहुत परेशानी हूई होगी।'

बीबी बोली, 'नहीं मुझे तो कोई परेशानी नहीं हुई। मैं खुद भी तो हूटिंग कर रही थी।'

आप का भविष्य

मेष : आय व्यय में समानता रहेगी, परिश्रम का फल मिलेगा, घरेलू झंझट होंगे, व्यवसाय में नरमी चलेगी, यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा, व्यय यर्थाथ, सरकारी कामों में सफलता, विशेष दौड़धूप से परेशानी।

वृष : कारोबार सामान्य, यात्रा की आशा है, वाद-विवाद से बचें, स्थिति डांवोडोल, नए काम से लाभ नहीं होगा, यात्रा में कष्ट, लाभ तो होगा पर खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, शुभफलों में बढ़ोतरी।

मिथुन : लाभ देर से मिलेगा, खर्चा ज्यादा, यात्रा सफल रहेगी, धन लाभ के अवसर मिलेंगे, यात्रा हो सकती है, धार्मिक कामों पर खर्च, शत्रु परास्त होंगे, रोज़गार धन्धे से लाभ और आर्थिक दशा भी सुधरेगी।

कर्क : धन खर्चा बढ़ेगा, दौड़धूप अधिक और काम भी पूरे होते रहेंगे, मनोरंजन आदि पर व्यय, चालू कामधन्धों में सुधार, पर माल देर से मिलेगा, यात्रा में सावधान रहना, बनते कामो में अड़चन।

सिंह : व्यापार मध्यम, धन व्यय अधिक और लाभ में कमी होगी, हालात सुधरेंगे और धन में भी वृद्धि होगी, बड़े लोगों की राय से काम बन जाएंगे, दौड़धूप अधिक पर सफलता कम, यात्रा हो सकती है,।

कन्या : कारोबार में उन्नति, कोई खास उलझन सुलझेगी, बकाया रकम मिलेगी, काम धन्धों में सुधार, राजकीय कामों में सफलता, विशेष परिश्रम से परेशानी होगी, शुभफलों में वृद्धि।

तुला : लाभ खर्च बराबर, बेचैनी अकारण रहेगी, व्यवसाय की स्थिति मजबूत, घर में बिमारी या क्लेश से परेशानी, अन्य हालात ठीक चलेंगे, रोज़गार से लाभ बढ़ेगा, काम बन जाएंगे, बड़े लोगों से मेल मिलाप।

वृश्चिक : हालात कुछ सुधरेंगे, कामों में सफलता एवं लाभ भी अच्छा होगा, मानसिक परेशानी और गुस्सा भी बिना कारण ही रहेगा, अन्य हालात ठीक चलेंगे, आय में वृद्धि, कारोबार सुधरेगा, मिश्रित फल मिलेंगे।

धनु : कहीं से शुभ सन्देश और यात्रा का प्रोग्राम बनेगा, कामधन्धों से लाभ होगा, आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण रहेगा, स्थायी कामधन्धों से लाभ बढ़ेगा, नातेदारों से मेल जोल।

मकर : रुकावटें तो आएंगी परन्तु सफलता मिलती रहेगी, आय व्यय समान, स्थायी काम धन्धों में सुधार, लाभ पहले से बढ़ेगा, नई योजना के चक्कर में न पड़ें, यात्रा में सुख, परिश्रम काफी रहेगा।

कुंभ : राजकीय कामों में परेशानी, परन्तु काम बन जाएंगे, कारोबार अच्छा चलेगा, आय में वृद्धि, दौड़धूप अधिक एवं सफलता भी रहेगी, रुकावटों पर विजय, आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण रहेगा।

मीन : सेहत नरम, व्यय कुछ अधिक होगा, बनते कामों में विघ्न, परन्तु मित्र सहयोग से सफलता मिल जाएगी, साहस दृढ़ रहेगा, यात्रा सफ़ल, कामकाज का बोझ बढ़ेगा, रुकावटों पर विजय मिलेगी।

ये मददगार महीने

—सुखदेव प्रसाद

एक जंगल के तट-प्रदेश में एक बुढ़िया रहती थी। उसके दो पुत्रियां थीं। एक का नाम था कतिंका और दूसरी का डोरबंका। कतिंका बुढ़िया की अपनी पुत्री थी, किन्तु डोरबंका उसकी पोष्यपुत्री थी। इस कारण स्वभावतः घर के सारे काम-काज का भार डोरबंका के ही कंधों पर आ पड़ा। डोरबंका देखने में भली तो थी ही, भोली और मृदु-स्वभाव की भी थी। कभी कोई शिकायत नहीं करती और बिना किसी आनाकानी के बुढ़िया मां और सौतेली बहन की फटकार-भरी आज्ञाओं का पालन किया करती।

डोरबंका यद्यपि बुढ़िया मां और अपनी बहन की बातों का कभी बुरा नहीं मानती और उनके बताए हर काम को पूरा करने के लिए तत्पर रहती, पर कतिंका और उस बुढ़िया के लिए फिर भी वह भार बनती गई।

दोनों उस पर तरह-तरह के ताने-बासे कसतीं और दुरदुराया करतीं।

'देखो न, खाना कितना खाती है!'' बुढ़िया चिल्लाती, ''हम लोगों के पास इतना पैसा कहां है कि हम इसका ढोल-जैसा पेट रोज़ भरा करें!''

'हां, मां!'' कतिंका झट जवाब देती, ''और इस पर तुर्रा यह कि अपने को मुझसे भी बहुत अधिक सुन्दर समझती है। क्या नाज़-नखरे हैं!'' उसकी कटाक्ष-युक्त वाणी से बुढ़िया को थोड़ी राहत मिल जाती मानो।

दोनों ने विचार किया कि उससे किसी तरह पिंड छुड़ाया जाए। दोनों ही इस बात पर कमर कसकर तुल गईं और डोरबंका को घर से निकालने के लिए कोई बहाना ढूंढ़ने लगीं।

एक दिन जब कड़ाके की सरदी पड़ रही थी और बर्फ़ीली हवा सायं-सायं करती बह रही थी, कतिंका डोरबंका के पास गई और उससे बोली—'मुझे बनफ़शा के कुछ फूल चाहिए। मेरे हृदय में इसके लिए बड़ी बेचैनी है। जंगल में चली जाओ और थोड़े-से फूल मेरे लिए तोड़ लाओ।''

'पर मेरी अच्छी बहन,'' डोरबंका घबराकर कहने लगी, 'इस भयावह जाड़े में भला मुझे बनफ़शा के फूल मिलेंगे कहां? तुम देखती ही हो, जंगल बिलकुल उजाड़-सा पड़ा है। पेड़ों पर एक पत्ता भी नहीं उग रहा और तुम मुझे बनफ़शा के फूल लाने को कहती हो।''

'मुझे इसकी कोई परवाह नहीं,'' कतिंका ने चिल्लाकर जवाब दिया। क्रोध से वह तिलमिला उठी, 'मुझे फूल चाहिए और हर हालत में चाहिए। तुम जाओ और बहस न करो। बिना फूल लिए इस घर में वापस आने की जुर्रत न करना।''

'हां,'' भीतर से गुड़गुड़ी पीते हुए बुढ़िया बोली, ''कतिंका के लिए बनफ़शा के फूल तोड़ ले लाओ और बिना लिए मत लौटना।''

बेचारी डोरबंका क्या करती! रोती-बिलखती वह जंगल में घुसी और बनफ़शा के फूलों की तलाश करने लगी। पर फूल मिलें भी तो! कड़ाके की सरदी थी। उसके हाथ-पांव ठिठुर रहे थे और दांत कट-कट कर रहे थे। फूलों की व्यर्थ तलाश में वह बढ़ती ही चली जा रही थी।

इतने में कुछ दूर आगे उसने देखा, आग की लपटें निकल रही थीं और आग के चारों तरफ़ एक दर्जन आदमी बैठे हुए हाथ-पैर ताप रहे थे। उन आदमियों की शकल-सूरत भौंड़ी थी। डरती-घबराती वह किसी तरह उनके पास पहुंची।

डोरबंका ने कांपते स्वर में कहा—''आप लोग मुझ पर थोड़ी दया करेंगे? सरदी से मैं

बड़ी ठिठुर गई हूं। मुझे आग तापने देंगे, बड़ी कृपा होगी आपकी . . .''

एक बूढ़ा आदमी, जिसकी उजली-उजली दाढ़ी बड़ी भली प्रतीत हो रही थी, उठा और अपनी चादर छोड़ता हुआ बोला, ''आओ बेटी, इधर आओ।'' उसके स्वर में दया का भाव था। उसने बड़े स्नेह से कहा, 'लो, मेरे पास बैठ जाओ। मैं जनवरी हूं। तुम कौन हो, कहां से आयी हो और इस समय यहां क्या कर रही हो ?''

दया और स्नेह-भरे ये शब्द सुनकर डोर-बंका अपने को थाम न सकी और फूट पड़ी।

'बाबा, मेरी मां और सौतेली बहन ने मुझे जंगल से अपने लिए बनफ़शा के फूल तोड़ लाने को भेजा है और कहा है कि जब तक फूल न मिलें, मैं घर लौटकर नहीं आऊं। ऐसे मौसम में भला मैं कहां से ये फूल ला सकती हूं ?''

''आह !'' जनवरी की नीली-नीली आंखें एक बार चमक उठीं, 'मैं तुम्हारी मदद करूगा, बेटी। भाई मार्च, मैं समझता हूं, यह काम तुम्हारे ही वश का है।'' उसने पास बैंठे, हरी चादर ओढ़े हुए अपने युवक मित्र की ओर घूमकर कहा। हरी चादर क्या थी, मानो हरी-हरी घास का एक सुन्दर सुहाना आवरण ही था और उस युवक की मुखाकृति भी बड़ी भव्य थी।

बूढ़े जनवरी का आदेश सुनकर भाई मार्च उठा और सिर हिलाकर, हाथ फैलाकर उसने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। और लो, देखो ! सारा पवन बनफ़शा की सुगंध से भर उठा, वातावरण सुरभिमय हो उठा और जहां देखो, वहीं फूलों के झुड-के-झुंड खिल उठे।

'जाओ बेटी, फूल तोड़ लो !'' बूढ़े बाबा ने डोरबंका को प्रोत्साहित करते हुए कहा, ''और अपने घर लौट जाओ।''

डोरबंका की खुशी का क्या पूछना ! उसने फूल बटोरकर अपने आंचल में भर लिए। फिर दौड़ती हुई अपनी मां और सौतेली बहन की ओर भागी।

उसे घर आते देखकर उसकी मां और कतिंका, दोनों बड़ी चकित हुई और आपस में कानाफूसी करने लगीं—''अरे-अरे, इसे फूल कहां से मिल गए ? अब क्या होगा ? अब हम लोगों को कोई दूसरा उपाय ढूंढ़ना होगा। उसे अब कोई अधिक कठिन काम बताना होगा।''

कुछ ही दिन बीते थे कि कतिंका डोरबंका के पास आकर रुक्ष स्वर में बोली—''मुझे बेर चाहिए, नहीं तो मैं मर जाऊंगी, अपनी जान दे दूंगी। जाओ और मेरे लिए जंगल से एक टोकरी भरकर अच्छे बेर ले आओ !'' उसने आदेश दिया, ''और हां, देखो, बिना बेर लिए कभी न लौटना।''

डोरबंका का हृदय तो यह सुनकर धक् से रह गया। ''भला इस जाड़े में मैं बेर कहां पाऊंगी ?'' यह कहती हुई वह जंगल की ओर चल पड़ी।

बेरों की खोज़ में वह इधर से उधर भटकती रही। तीखी बर्फ़ीली हवा और बदन को पत्थर कर देने वाली कड़ाके की सर्दी, साथ में इतनी थकान ! उसे लगा, वह मूर्च्छित हो जाएगी, उसके प्राण भी ठंडक में कांप रहे थे।

इतने में वही पुराने दोस्त—महीने—उसे नज़र आए, जो आग के चारों तरफ़ बैठकर हाथ-पैर सेंक रहे थे।

''मुझे भी तनिक आग से पास बैठने को जगह देंगे आप लोग ?'' उसने कंपित-श्रान्त स्वर में पूछा।

उजली दाढ़ी वाले उस बूढ़े ने ऊपर ताका—'अरे, यह तो हम लोगों की वही नन्ही-सी दोस्त है ! अब तुम्हें क्या तकलीफ

शेष पृष्ठ २६ पर


मोटू पतलू
मोटू-पतलू इस बात से परेशान थे, कि खेल के मैदान में वे अब तक नाकाम रहे हैं. और यह बात वे अच्छी तरह समझते थे कि उन की नाकामी का मुख्य कारण घसीटा राम है. पर यह बात किसी की समझ में नहीं आ रही थी कि इस से छुटकारा किस प्रकार पाया जाये.
घसीटा राम के साथ-साथ दूसरी मुसीबत है यह मोटी अक्ल वाला जूडो मास्टर.
यह चिकपैंजी आदमी होने का दावा करता है, पर इस उल्लू में अक्ल बन्दरों जितनी भी नहीं है.
जब तक हम इन दोनों से छुटकारा नहीं पायेंगे. हमारी टीम खेल के किसी मैदान में नहीं जम सकती.
अरे तुम ही हमारा पीछा छोड़ो और क्वालिटी की आईस क्रीम में जा कर जम जाओ.
खेल के मैदान में जो थोड़ा बहुत कमाल दिखाया है, वह हमने दिखाया है. तुम तो डूबते के गले में बंधा भारी पत्थर हो.
दर असल खेल का मैदान हो, या मैदाने-जंग, हर जगह बात दिमाग और ताकत की है. दिमाग और ताकत पास हो तो कोई भी काम कठिन नहीं.
और मेरी ताकत का जवाब है कोई ? पहाड़ से टकराऊं तो पहाड हिल जाये
और मेरे दिमाग़ का लोहा तो वे सभी लोग मानते हैं. जिन्हें मैं बीस साल से लोहे के चने चबवाता आ रहा हूं.



अपनी ताकत की एक मिसाल याद आ रही है मुझे. एक बार मैं एक गाय का दूध पीना चाहता था. पर मेरे पास गाय का दूध निकालने के लिये बरतन नहीं था.
तुम्हारे पास दिमाग़ तो है नहीं जो तुम अक्ल लड़ाते !
दिमाग़ की नहीं, वहां ताक़त की ज़रूरत थी.
मैं ने गाय को अपने हाथों में इस तरह ऊपर उठाया . . . और उसका दूध पी लिया.
एक बात मुझे भी याद आ रही है, ऐसे ही एक बार घसीटा राम को दूध पीना था. इसके पास ताकत तो थी नहीं कि यह गाय को उंठा लेता.
पर इसने दिमाग़ से काम लिया और दूध पीने के लिये गाय के नीचे लेट गया



गाय ने
और नी
मतलब है ? ताकत आज़माने का केस सामने
तो तुम टायें टायें फिस हो गये.
ताकत आज़माने का नहीं, यह दिमाग़ आज़माने का केस था.
अरे मेरा बटवा. वह टक्कर मारने वाला मेरी पाकिट मार गया. मेरे बटवे पर हाथ साफ़ कर गया.
हाथ साफ़ कर गया. न यहां कोई साबुन है और न पानी. और वह हाथ साफ़ कर गया.
बात यह सच्ची है.
सच्ची सही. पर तब अक्ल और ताक़त में समझौता नहीं था. आज समझौता है.
चलो जूडो मास्टर की ताकत तो इसके गठीले बदन से नज़र आ रही है, पर तुम्हारे पास अक्ल है, इसका क्या सबूत है ?
बहुत बड़ा सबूत है. डाक्टर झटका से पूछ लो. एक बार इसने मेरी आँखें टैस्ट करने के लिये यह चार्ट . . . इस तरह उल्टा लटका दिया था. मैं फ़ौरन समझ गया कि आँखों के साथ-साथ डाक्टर मेरा दिमाग़ भी टैस्ट करना चाहता है. इस लिये मैं फ़ौरन उल्टा हो गया . . .
और इस तरह चार्ट पढ़ लिया.
वाह-वाह. अक्ल के पीछे लठ्ठ ले कर दौड़ने की इस से बड़ी मिसाल दुनिया में नहीं मिल सकती.
चलो, चलो, इसके मुंह लगने से क्या लाभ. हमारे पास है, मेरी अक्ल और तुम्हारी ताकत. इन दोनों से तो हम दुनिया उथल पुथल कर देंगे.
हां-हां चलो. और कहीं चल कर अपना कमाल दिखाते हैं.

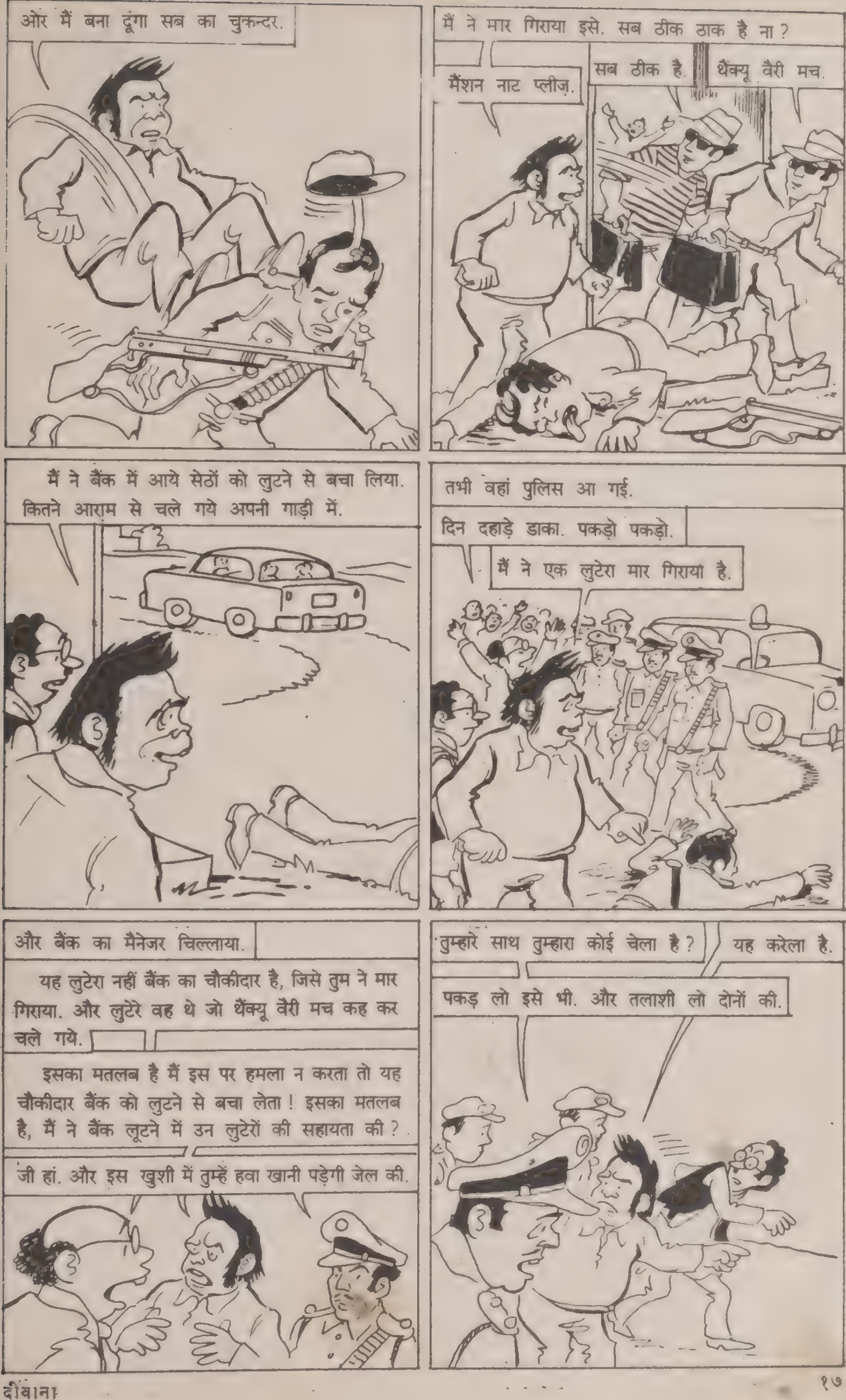


अपनी ताकत की एक मिसाल याद आ रही है मुझे. एक बार मैं एक गाय का दूध पीना चाहता था. पर मेरे पास गाय का दूध निकालने के लिये बरतन नहीं था.
तुम्हारे पास दिमाग़ तो है नहीं जो तुम अक्ल लेते.
दिमाग़ की नहीं, वहां ताक़त की ज़रूरत थी.
का
कर
इस तरह
खोल दी.
मान गया तुम्हारी ताकत को.
ऐसे ही मैं मान गया तुम्हारे दिमाग़ को.
तभी राह चलते एक आदमी से घसीटा राम की टक्कर हो गई.
आँखें हैं या बटन. देख कर नहीं चल सकता ?
उसने टक्कर मार कर मेरा कंधा तोड़ दिया. वह समझता क्या है अपने को. ज़रा दो हाथ रसीद कर के अपनी ताकत दिखाना उसे !
ऐ मिस्टर ! ज़रा इधर आना !
कहो. क्या बात है ?
इसने धक्का मार कर मेरा कंधा तोड़ दिया.
हां. तोड़ दिया. तो फिर क्या हुआ ?
तोड़ दिया तो अच्छा किया. कंधा होता किस लिये है ? तोड़ने के लिये ही तो होता है.



क्या मतलब है? ताकत आज़माने का केस सामने आया तो तुम टायें टायें फिस हो गये.
ताकत आज़माने का नहीं, यह दिमाग़ आज़माने का केस था.
अरे मेरा बटवा. वह टक्कर मारने वाला मेरी पाकिट मार गया. मेरे बटवे पर हाथ साफ़ कर गया.
हाथ साफ़ कर गया. न यहां कोई साबुन है और न पानी. और वह हाथ साफ़ कर गया.
अब समझ में आया? यह केस दिमाग़ का था, या ताकत का? टक्कर मारो. और पाकेट मार लो.
टक्कर मारो और पाकेट मार लो! लो फिर अब देखो मेरी ताकत.
बिल्कुल ठीक है, कमाल कर दिया. मोटा सेठ है, मोटा बटवा हाथ आयेगा.
क्या बात है? क्या हुआ?? मार ली पाकेट???
अक्ल मारी गई है तुम्हारी. उसने अपनी पाकेट तक मेरा हाथ ही नहीं जाने दिया. अरे वह मेरा बटवा साफ़ कर गया है.
अब तुम कहोगे, यह केस भी ताकत का नहीं दिमाग़ का था. अकल और ताकत के चक्कर में हम दोनों की जेब कट गई,
मेरे बटवे में मच्छमार दवा का नाम था. तेरे बटवे में क्या था?
मेरे बटवे में एक रुपया और एक लाख रुपया था.
एक रुपया और एक लाख रुपया?
हां, एक रुपया था और एक लाख रुपये की लाटरी का टिकट था.


वह देखो. वह रहा मेरा बटवा.
वह तो उस आदमी की जेब से गिरा है.
मेरी जेब हो, या उस आदमी की जेब. जेब तो जेब होती है.
देखो, यह चोरी है. उस आदमी का बटवा मत उठाओ.
यह ताकत का नहीं, दिमाग़ का केस है. तुम चुप रहो.
भारी बटवा है. घर जा कर देखूंगा. क्या खोया और क्या पाया.
वह देखो, एक आदमी ने बैंक लूटने के लिये बंदूक निकाल ली है.
मैं बताऊंगा इसे कैसे लूटते हैं बैंक.
क्या कर रहे हो? बात तो सुनो!
BANK OF
कुछ नहीं सुनूंगा मैं. यह दिमाग़ का नहीं ताकत का केस है.
वह देखो, बैंक के अंदर से बंदूक चलने की आवाज़ सुनो! एक लुटेरा बाहर है, और बाकी अंदर.
BANK OF
धड़ाम


ओर मैं बना दूंगा सब का चुकन्दर.
मैं ने मार गिराया इसे. सब ठीक ठाक है ना?
मैंशन नाट प्लीज़.
सब ठीक है.
थैंक्यू वैरी मच.
मैं ने बैंक में आये सेठों को लुटने से बचा लिया. कितने आराम से चले गये अपनी गाड़ी में.
तभी वहां पुलिस आ गई.
दिन दहाड़े डाका. पकड़ो पकड़ो.
मैं ने एक लुटेरा मार गिराया है.
और बैंक का मैनेजर चिल्लाया.
यह लुटेरा नहीं बैंक का चौकीदार है, जिसे तुम ने मार गिराया. और लुटेरे वह थे जो थैंक्यू वैरी मच कह कर चले गये.
इसका मतलब है मैं इस पर हमला न करता तो यह चौकीदार बैंक को लुटने से बचा लेता! इसका मतलब है, मैं ने बैंक लूटने में उन लुटेरों की सहायता की?
जी हां. और इस खुशी में तुम्हें हवा खानी पड़ेगी जेल की.
तुम्हारे साथ तुम्हारा कोई चेला है?
यह करेला है.
पकड़ लो इसे भी. और तलाशी लो दोनों की.

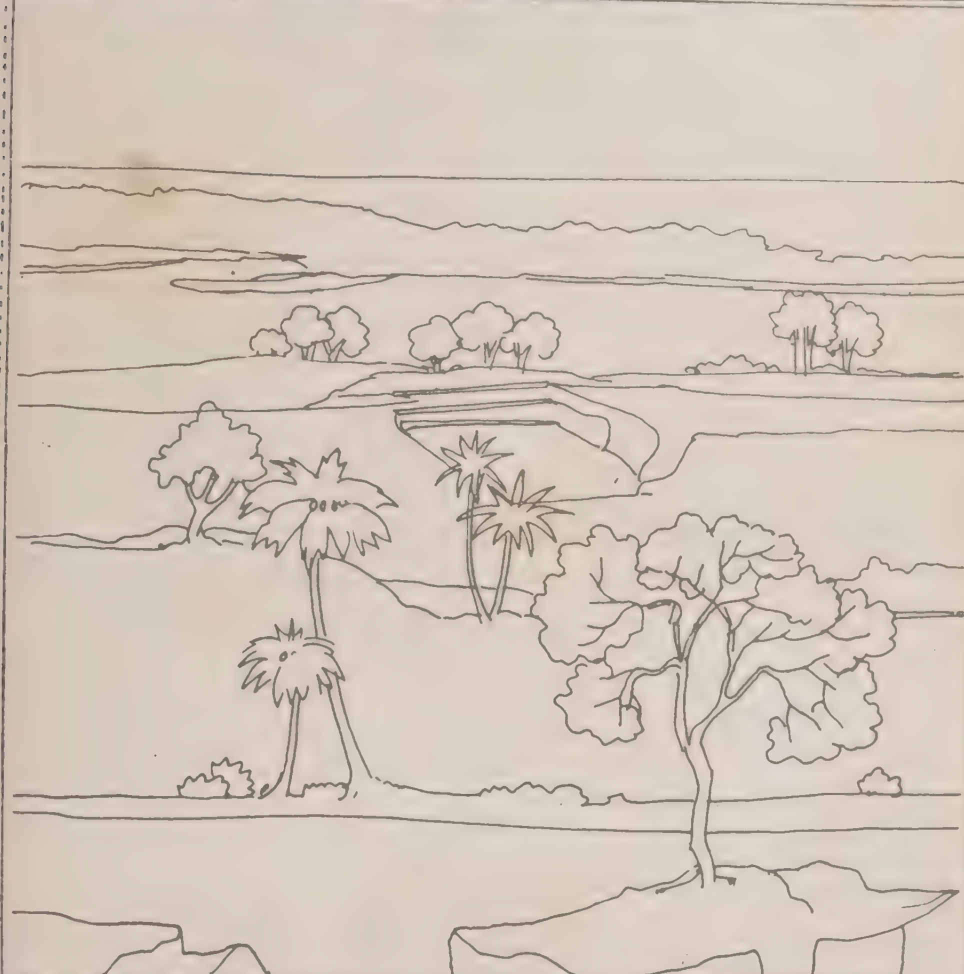


अगले अंक में इन दीवानों से फिर मिलिये.

दीवाना-कैमल
रंग प्रतियोगिता
निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना - आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०



केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम.. उम्र..................

पता..

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

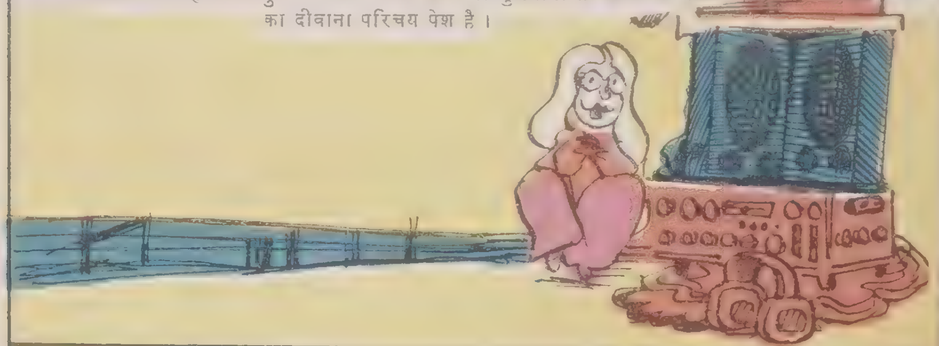
चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ३१-१-१९८१

CONTEST NO.18

VISION

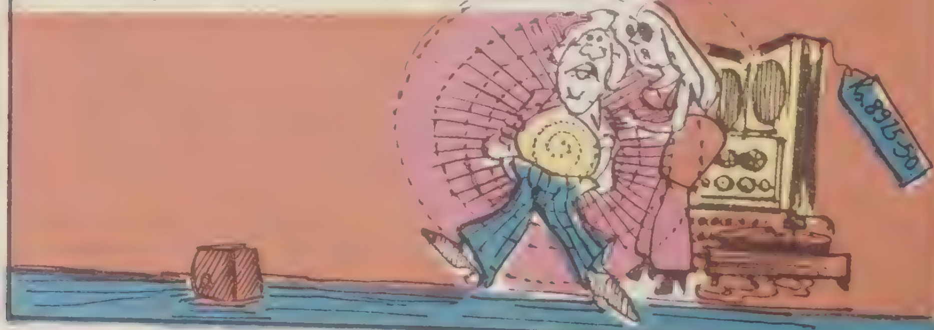
स्टीरियोफोनिक सिस्टम

जमाना स्टीरियो का है : मोनो के दिन लद गये। आज रिकार्ड कैसेट, रिकार्ड प्लेयर, टेप रिकार्डर, रेडियो ग्राम और ट्‌ इन वन सब स्टीरियो मांगते हैं। स्टीरियो सिस्टम की आवाज का मजा ही कुछ और है। संगीत के शौकीनों की खांसी भी स्टीरियो साऊंड सिस्टम में आने लगी है मोनो चुभने वाली और स्टीरियो सुखदायी हैं स्टीरियो सिस्टम का दीवाना परिचय पेश है।



स्टीरियो थीडाइमेंशन आवाज का नाम है इसमें गहराई और सप्तम स्वरों का मिश्रण बिना आवाज मे विकार पैदा किये उत्पन्न किया जाता है। ध्वनि इस सिस्टम में चलती हुई महसूस होती है। एक स्पीकर से दूसरे स्पीकर तक आवाज छाया की तरह जाती है। आवाज कैसे चलती है इसे उदाहरण द्वारा समझिये—

उदाहरण—स्टीरियो सिस्टम बहुत महंगा आता है इतना महगा कि इसे खरीदने के बाद आपके पास सर्दियों के लिये गर्म कपड़ों के लिये पैसे भी न बचें। नतीजे के तौर पर सर्दियों में आपके पेट में वायु का गोला बनेगा। जब शूल उठेगा तो पेट में गोला ऊपर नीचे चलता हुआ महसूस होगा। स्टीरियो साऊण्ड उसी प्रकार चलता है।



टेप डैक, स्पीकर व एम्पलीफायर के अतिरिक्त स्टीरियो सिस्टम में हैडफोन भी मिलता है। इसे एम्पलीफायर में फिट करके सिर कानों पर पहन लीजिये। स्टीरियो संगीत आपके कानों तक ही पहुंचेगा। बाहर शोर नहीं होगा। दूसरों को आपत्ति भी नहीं होगी। हैडफोन पहन लेने पर बाहरी आवाजें एक दम कट जाती हैं।कानों में शुद्ध संगीत का शहद घुलता रहता है,बाहर कितना ही शोर हो रहा हो आपको पता नहीं लगेगा। चित्र में देखिये महाशय हैडफोन लगा कर संगीत सुन रहे हैं।पास के कमरे में उनकी बीबी नौकर की गोद में बैठकर बेंगन का भर्ता और केले की फ्रूट सलाद बनाने की विधि सीख रही है। दोनों जोर-जोर से इन महाशय की बेवकूफी पर हँस रहे हैं। खिल्ली उड़ा रहे हैं। लेकिन इनको कुछ खबर नहीं लग रही।



स्टीरियो डैक या एम्पलीफायर पैनल पर आपको ऐसे बटन नजर आयेंगे जैसे यह स्टीरियो सिस्टम नहीं किसी अंतरिक्ष यान का कंट्रोल पैनल हो, इससे घबराइये नहीं। असली काम करने वाले तो दो ही नॉब हैं,ऑफ ऑन तथा वाल्यूम वाला। बाकी फकत आप पर रौब डालने के लिये लगाये गये हैं। अगर आप किसी नॉब को बाहर खींचेंगे तो पता लगेगा कि सलाख के ऊपर बस नॉब लगा है। साथ में फक्त आपको उल्लू बनाने के लिये लिखा होगा, बॉस, ट्रेबल, टनीटर कंट्रोल एटॉमिक रियेक्शन बटन, खाली पीली बूम स्विच, हाइड्रोजन बम जैक, हूटर सिलेक्टर, गईयां चैनल, कंट्रोल, यूरेनियम डिपॉजिटमीटर, पार्वती लाचन, मुगलाई परांठा नॉब,लिज्जत पापड़ सॉकेट सू सू ट्रिगर आदि।



विभिन्न तार के स्वरों का स्टीरियो सिस्टम कैसे मिश्रण होता है वह इस उदाहरण द्वारा समझ में आयेगा—'मान लीजिये आपकी सास आपके पास आई हुई है और आपके घर नकली बनस्पति घी खाकर उसका गला बैठ गया है। उधर आपको दफ्तर से आने में देर होती है।घर पहुंचने पर वह बैठे गले से आपको ताड़ना शुरू कर देती है। दूसरी ओर से आपकी श्रीमती जी अपनी तीखी आवाज में आपको खरी खोटी सुना रही हैं। साथ में डरकर मुन्ना भी पैंSSS करने लग पड़ा है।इन सब स्वरों का मिश्रण स्टीरियो जैसा ही होगा आपकी स्टीरियो में खबर ली जा रही है।





शेष पृष्ठ २४ पर

चमकती आंख और तीन जासूस

ले. प्रेत नाथ
भाग-५

'हाँ' आंटी, राजू बोला, मुझे उम्मीद है मेरे एक और मित्र को साथ लाने से आप नाराज नहीं होंगी।

'अरे नहीं !' एक लड़के से क्या फर्क पड़ता है, जब कि सारा दिन तुम तीन लड़के तो होते ही हो। ये ठीक ही था कि महिन्दर और श्याम, राजू के घर करीब-करीब उतनी ही बार खाना खाते थे, जितनी बार वह अपने घर खाते होंगे। मैंने एक डिब्बा सैंड-विच और शर्बत बना रखा है, तुम दफ्तर में ले जाकर ही खा लो। मुझे कुछ समय के लिए शहर जाना है और माथुर पहले से ही गये हुए हैं। इस कारण दोपहर को तुम्हें ही दफ्तर का ख्याल रखना होगा।

'खरीददारों का विशेष ध्यान रखना, राजू !'

'हां आंटी ! हम एक क्षण में वहाँ पहुंच जाते हैं।'

वह सब दो नम्बर की टनल से होकर वर्कशाप पार कर बाहर दफ्तर में पहुँच गये। दफ्तर के अन्दर ढेर सारे सैंडविच, कई बोतल शर्बत तथा कैम्पा कोला की रखी थीं।

'अच्छा लड़कों ! मिसेज माथुर बोलीं, मैं तो छोटा ट्रक लेकर शहर जा रही हूं, हँस इसे चला रहा है, जब तक मैं न लौटूं कहीं न जाना। राजू ! सामान बेचने का पूरा ध्यान रखना समझे।

'अच्छा आंटी', मैं कहीं नहीं जाऊँगा।'

ये कह कर मिसेज माथुर बाहर चली गईं। उनके बाहर जाते ही कुछ भी समझे बिना चारों मित्र सैंडविचों पर टूट पड़े तथा दो-दो सैंडविच और एक एक ग्लास शर्बत पीकर ही दम लिया।

तब महिन्दर ने राजू से प्रश्न किया, 'हम प्रतिमा में आखिर ढूंढ़ क्या रहे हैं, मेरा मतलब यदि उसमें कुछ है तो वह क्या है ?'

'गस' ने, अपने पिता को 'चमकती आंख' के विषय में बात करते सुना था। मेरे विचार से ये 'चमकती आंख' 'अगस्टस आफ पोलेंड' की प्लास्टर प्रतिमा में छुपी हुई है।

परन्तु ये 'चमकती आंख' है क्या, श्याम ने प्रश्न किया।

'ये अवश्य ही कोई छोटी वस्तु है' राजू ने उत्तर दिया, अन्यथा इसे प्लास्टर प्रतिमा में छुपाना संभव नहीं होता। तथा इस बात की ओर ध्यान देना भी जरूरी है कि गस के दादा जी ने इसे बहुत यत्न से छुपाया है। तथा 'चमकती आंख' जैसा नाम केवल अमूल्य रत्न का ही हो सकता है इतिहास के अनुसार भी प्राचीन महान रत्नों के ही नाम थे जैसे 'महान मुगल', 'भारत का सितारा', या 'मिस्र का सुलतान' इत्यादि। 'चमकती आंख' भी कोई अमूल्य रत्न ही है। मि० अगस्त इसे किसी दूर पूर्वीय देश से लाये होंगे तथा कोई और व्यक्ति भी उनके पीछे

तभी से पड़ गये होंगे और उनका शेष जीवन छुपते-छुपाते बीता होगा ? कमाल है। महिन्दर बोला यदि तुम्हारा अनुमान ठीक हो तो कितना मजा आए।

'चुप, चुप'। राजू बोला, 'लगता है कोई ग्राहक आ रहा है। एक बहुत सुन्दर काले रंग की नई कार कबाड़ी घर के दरवाजे के भीतर घुसकर दफ्तर के पास आकर रुक गई, चालक की वर्दी में बैठा एक आदमी कार चला रहा था। कार रुकते ही कार का सवार जो कि लम्बा पतला आदमी था बाहर निकला। उतर कर वह एक क्षण के लिए रुका और इसी समय उसकी दृष्टि बाग में रखी प्लास्टर प्रतिमाओं पर पड़ी।

उसके बायें बाजू पर पोलिश से चमकती एक काली लकड़ी की छड़ी लटक रही थी। छड़ी के सिरे से उसने धीरे से एक प्रतिमा को छू कर देखा फिर साधारण तौर से सारी प्रतिमाओं के सिर पर हाथ फिराया और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे छूने से कुछ असन्तुष्ट होकर उसने अपनी उँगलियों से धूल पोंछी और दफ्तर के द्वार की ओर मुड़ गया।

राजू खड़ा हुआ उसकी प्रतीक्षा ही कर रहा था, दूसरे सब लड़के दफ्तर के अन्दर बैठे थे परन्तु राजू के बगल से उन्हें बाहर का सब कुछ दिखाई दे रहा था। एक अजीब सी उत्तेजना उनके मन में उठ रही थी। आगन्तुक लम्बे पतले ग्राहक ने बड़े करीने से कपड़े पहन रक्खे थे। उसका रंग काला था, उसके काले बालों में कोई-कोई सफेद बाल दिखाई दे रहा था परन्तु इन सब बातों से अधिक महत्वपूर्ण थे उसके माथे पर गुदे छोटे-छोटे तीन बिन्दु।

'माफ कीजिये, तीन बिन्दु ने बड़ी नम्रता से पूछा ?' 'ये रोचक प्रतिमायें, क्या आपके पास और भी ऐसी प्रतिमायें हैं। वहां रक्खी पांच प्रतिमाओं की ओर संकेत किया।

'राजू ने अपने मित्रों से पहले ही उसके माथे के 'तीन बिन्दु' देख लिए थे। और इसी कारण वह आंखों को मिचकाना आरम्भ कर शरीर ढीला छोड़ मुंह को लटका कर खड़ा था। उसने आंखें लगभग बन्द सी ही कर ली थीं। वास्तव में राजू का शरीर कुछ भारी था और उसे नापसन्द करने वाले अक्सर उसे मोटा कहते थे।

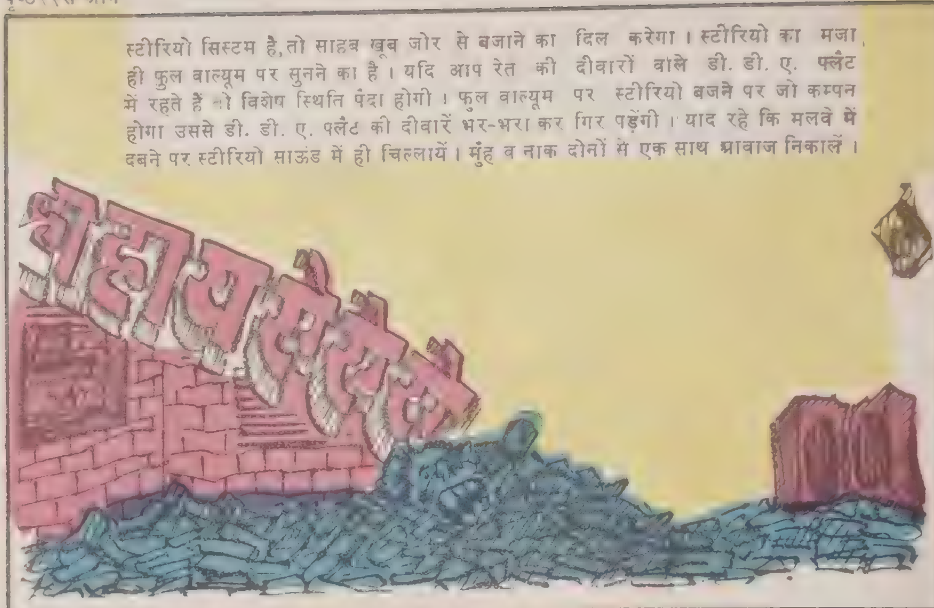
'हाँ जनाब', वह नाक से आवाज निकालते हुए बोला, किसी अपरिचित के लिए वह एक मोटा बुद्धू दिखाई दे रहा था।

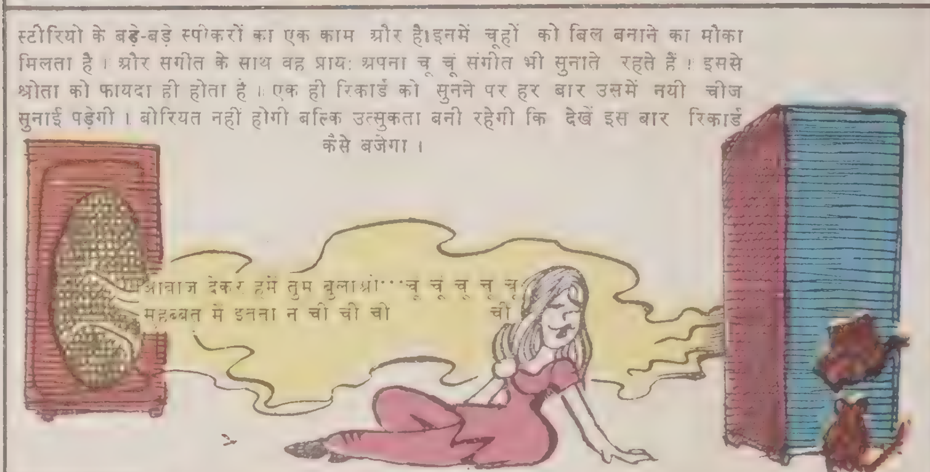
'क्या तुम्हारे पास कोई और ऐसी प्रतिमायें हैं, तीन बिन्दु ने प्रश्न दोहराया।

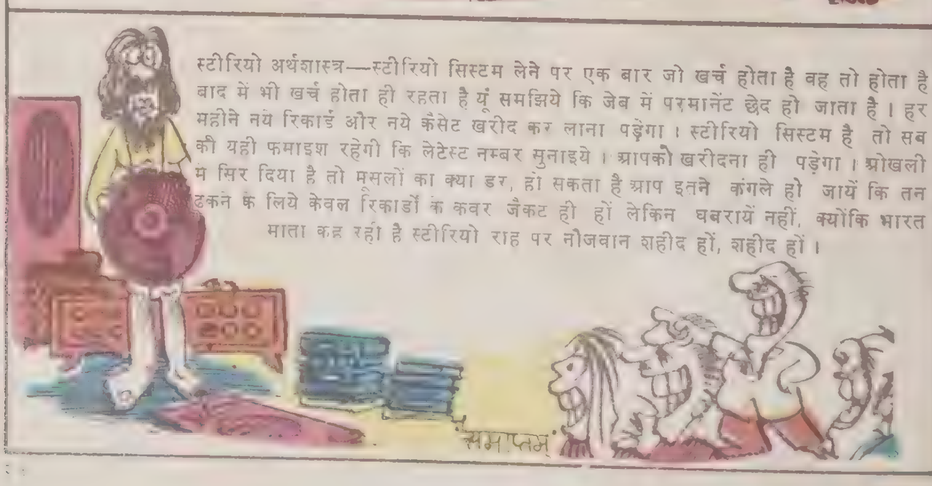
शेष पृष्ठ ४३ पर



पृष्ठ २१से आगे


स्टीरियो सिस्टम है,तो साहब खूब जोर से बजाने का दिल करेगा। स्टीरियो का मजा ही फुल वाल्यूम पर सुनने का है। यदि आप रेत की दीवारों वाले डी. डी. ए. फ्लैट में रहते हैं तो विशेष स्थिति पैदा होगी। फुल वाल्यूम पर स्टीरियो बजने पर जो कम्पन होगा उससे डी. डी. ए. फ्लैट की दीवारें भर-भरा कर गिर पड़ेंगी। याद रहे कि मलवे में दबने पर स्टीरियो साऊंड में ही चिल्लायें। मुंह व नाक दोनों से एक साथ आवाज निकालें।


स्टीरियो के बड़े-बड़े स्पीकरों का एक काम और है।इनमें चूहों को बिल बनाने का मौका मिलता है। और संगीत के साथ वह प्रायः अपना चू चूं संगीत भी सुनाते रहते हैं। इससे श्रोता को फायदा ही होता है। एक ही रिकार्ड को सुनने पर हर बार उसमें नयी चीज सुनाई पड़ेगी। बोरियत नहीं होगी बल्कि उत्सुकता बनी रहेगी कि देखें इस बार रिकार्ड कैसे बजेगा।
आवाज देकर हमें तुम बुलाओ···चू चूं चू चू चू
महब्बत में इतना न ची ची ची ची


स्टीरियो अर्थशास्त्र—स्टीरियो सिस्टम लेने पर एक बार जो खर्च होता है वह तो होता है बाद में भी खर्च होता ही रहता है यूं समझिये कि जेब में परमानेंट छेद हो जाता है। हर महीने नये रिकार्ड और नये कैसेट खरीद कर लाना पड़ेगा। स्टीरियो सिस्टम है तो सब की यही फमाइश रहेगी कि लेटेस्ट नम्बर सुनाइये। आपको खरीदना ही पड़ेगा। ओखली में सिर दिया है तो मूसलों का क्या डर, हो सकता है आप इतने कंगले हो जायें कि तन ढकने के लिये केवल रिकार्डों के कवर जैकट ही हों लेकिन घबरायें नहीं, क्योंकि भारत माता कह रहा है स्टीरियो राह पर नोजवान शहीद हों, शहीद हों।
समाप्तम्



तुम दोनों जैसे मनहूस आदमी मैंने आज तक नहीं देखे।
क्या ?
मनहूस और क्या ? पिछले साल से यह कॉमिक स्ट्रिप टायम्स ऑफ इन्डिया में छपनी शुरू हुई। ठीक ?
तब से अब तक बम्बई टायम्स ऑफ इंडिया में तीन बार हड़ताल हो चुकी है।
सुना तुमने अपनी बीवी की बात।
पुना क्यों नहीं ?
ये अन्धविश्वासी औरतें ?
तुम्हारी बीबी होती तो पता लगता कि बीबी को समझाना कितना मुश्किल होता है।
कुछ न कुछ इलाज तो करना ही पड़ेगा।
अन्ध विश्वास से लड़ना ही चाहिये।
इलाज
मैंने सोच लिया हमें क्या करना है।
क्या ?
तुम्हारे हाथ में हथौड़ा क्यों ?
अब से हम इस कॉमिक के हर डायलाग बैलून में जूता लगायेंगे।

पृष्ठ१०से आगे

है, बेटी ?'' उसने डोरबंका को पास बैठने की जगह देते हुए पूछा।

डोरबंका बोली—''बाबा, देखो न, अब मुझे अपनी सौतेली बहन के लिए बेर ढूंढ़ने पड़ रहे हैं।

इतना कहकर वह फिर फूट पड़ी और उसके फूल-से कोमल मुखड़े को आंसुओं ने बुरी तरह भिगो दिया।

बूढ़े ने उसे ढांढस बंधाया, ''इस तरह रोया नहीं करते। बहादुर बनना चाहिए।''

''भाई जून !'' बूढ़े ने मुड़कर उस ओर संकेत करते हुए कहा, जिधर गेहूं के सुनहरे-भूरे बालों के-से रंग की चादर ओढ़े जून बैठा था। ''देखो, इस नन्ही बिटिया के लिए कुछ कर सको तो करो।'' उसे आदेश मिला।

जून ने सिर हिलाया और हाथ फैलाकर स्वीकारात्मक उत्तर दिया। और लो, देखो ! हर कहीं बेर के फल उग आए। फिर से डोरबंका उठी और उसने बेरों से अपनी टोकरी भर ली।

टोकरी लिए जब वह घर पहुंची, तो उसकी मां और बहन देखकर स्तंभित रह गईं। कहां से बेर मिल गए इसे ?—उन्होंने सोचना शुरू किया।

कतिंका जल-भुनकर अंगारा हो रही थी। उसके क्रोध का पारावार नहीं था। और इसी क्रोधावेग में उसने कुछ ही समय बाद डपटकर डोरबंका को कहा—''चली जाओ, और मेरे लिए कुछ सेब ले आओ।''

इन रोषपूर्ण शब्दों के साथ इस बार डोरबंका को पकड़कर उसने अपने हाथों से घर के बाहर धकेल दिया।

और, इस तरह डोरबंका को फिर जंगल की धूल छानने के लिए निकल जाना पड़ा।

अंत में वह थककर भूखी-प्यासी एक जगह बैठ गई और चिल्ला-चिल्लाकर रोने लग गई। वह बिलकुल निराश, हतप्रभ और निःस्पंद सी हो गई थी। पर, वहीं उसके वे पुराने मददगार दोस्त—महीने—आ पहुंचे। उससे पूछताछ की और सारी बातें सुनकर बूढ़े जनवरी ने मुसकाते हुए कहा—''अच्छा, तो अब सेब चाहिए।''

''भाई सितंबर !'' बूढ़े ने पके अंगूर के रंग की चादर लपेटे हुए अपने दोस्त को बुलाया, ''इधर सुनो और अपना कर्तव्य पूरा करो।''

सितंबर ने सिर हिलाते हुए हाथ फैलाए और लो, देखो, एक पेड़ वहीं उग गया, जिसमें सुन्दर-सुन्दर मधुर स्वादिष्ट सेब सैकड़ों की संख्या में लटक रहे थे।

उसने डोरबंका से कहा—''एक ही बार इसे हिलाना और जो फल गिर जाएं, उठा कर ले जाओ।''

डोरबंका ने पेड़ को धीरे-धीरे हिलाया और दो सेब नीचे गिरे। उन दोनों सेबों को उठाकर वह आनंद और संतोषपूर्वक घर चली गई।

तीसरी बार भी डोरबंका को सफलता के साथ लौटते हुए देखकर कतिंका और उसकी मां की क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित हो उठी और वे आपे से बाहर हो गईं।

''बस, केवल दो सेब ?'' कतिंका चिल्लाई, किन्तु उसने एक सेब को जब मुंह में लिया और चखा, तो उसे और भी सेब खाने की इच्छा हो गई।

''अब मैं स्वयं जाऊंगी और अधिक-से-अधिक सेब लाऊंगी।'' वह बोली और जंगल की ओर निकल पड़ी।

वह थोड़ी दूर ही गई थी कि आग तापते हुए बारहों महीने उसे मिले।

''एक तरफ़ खिसक जाओ !'' रूखे स्वर में बोलती हुई उन के बीच से घुसकर वह स्वयं आग के सामने चली गई और आग तापने लग गई।

''क्या बात है, किसलिए यहां आयी हो तुम ?'' उजली दाढ़ी वाले बाबा ने उससे

शेष पृष्ठ ३१ पः

क्यों और कैसे

प्र० : पंखा चलाने से हमे ठंडक क्यों महसूस होती है?

मुशरिफ अली—पौड़ी गढ़वाल

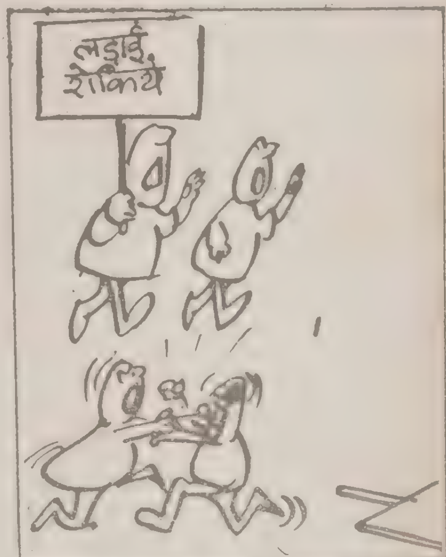
उ० : जब हमें गर्मी या सर्दी महसूस होती है तो वास्तव में हमें अपने रक्त का तापमान महसूस होता है। हमारा शरीर 98.6⁰ फेरनहीट का तापमान शरीर में बनाये रखता है चाहे बाह्य वातावरण का तापमान कुछ भी हो।

इसका अर्थ ये नहीं है कि हमारे शरीर का भीतरी तापमान घटता या बढ़ता नहीं है, अपितु जब भी ये बदलता है शरीर अपने अन्दर कुछ व्यवस्था कर उसे फिर से 'नार्मल' कर लेता है। ये कार्य दिमाग के भीतर एक सैन्टर द्वारा नियंत्रित किया जाता है जो ठंड होने पर रक्त का तापमान बढ़ा देता है; तथा गर्मी होने पर उसे घटा देता है।

कल्पना करते हैं कि रक्त का तापमान कम हो गया है, तुम्हारी सहायता करने वाले नरवस सिस्टम को इसे सम्भालने का आदेश मिलता है। शरीर की कुछ विशेष ग्रन्थियों से ऐसे तत्व उत्पन्न होते हैं जिन से शरीर की आक्सीजन अधिक तेजी से जलने लग जाती है। शरीर की मांसपेशियों तथा जिगर में अधिक आक्सीजन पहुंचने लग जाती है। शरीर की रक्त शिरायें सिकुड़ जाती हैं ताकि रेडियेशन से कम गर्मी नष्ट होने लगती है शरीर की इस प्रतिक्रिया द्वारा शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है।

अब सोचो यदि रक्त का तापमान बढ़ जाये तो ऐसे में ओक्सीडेशन का कार्य धीमा कर दिया जाता है ताकि शरीर में गर्मी कम उत्पन्न हो, त्वचा की नलिकायें फैल जाती हैं ताकि रेडियेशन से शरीर की बढ़ी गर्मी कम हो तथा पसीना शीघ्र सूखे। जब कोई तरल पदार्थ भाप बन कर उड़ता है तो अपने साथ गर्मी खींच लेता है।

पसीना आने पर भी ऐसा ही होता है, शरीर की त्वचा की नलिकाओं से आया पसीना बिलकुल पानी के फुहारे का काम करता है जो शरीर को धोकर बाहर और अन्दर से ठंडा कर देता है। पसीना शरीर की त्वचा पर के करोड़ों छोटे छोटे छेदों से निकलता है। यदि इस समय शरीर के पास



की हवा सील भरी होती है तो शरीर ठंडा होता प्रतीत नहीं होता, परन्तु शरीर के पास आने वाली हवा को यदि पंखा चला कर घुमाया जाता है तो पसीना सूखने का कार्य तेजी से होने लगता है, हमारा शरीर इस प्रकार गर्मी खोता जाता है और हमें ठंडक महसूस होती है।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


कब किसको कौन सी बात, कैसे समझाइ जाये ? आज के युग में यह बहुत बड़ी समस्या है. देखिये, नीचे एक सीधी सी बात कितने आसान तरीके से समझाई रही है. मगर . . . .
तीन मछलिया
ऐसे ही दो भालू से हो गये.
तीन भालू.
ऐसे ही यह तीन हाथी.



ऐसे ही आगामी अंक में आप भी हमारे साथ

खेल खेल में

भारत के टैस्ट अम्पायर

भारत में अब तक खेले गये १०६ टैस्टों में ३९ अम्पायरों ने अम्पायरिंग की है इनमें से ३ भारतीय हैं! १९३३-३४ में भारत में हुए तीन टैस्ट की सीरीज में इंगलिश अम्पायरों ने टैस्ट मैच खिलाये। उस समय भारत अंग्रेजी राज्य का भाग था। ये तीन अम्पायर हिगिंस, टैरेन्ट व हिच थे। पूरा ब्यौरा—

अम्पायर	कुल टैस्ट	इंगलैंड	आस्ट्रेलिया	न्यूजीलैंड	वे.इंडीज	पाक
१. सत्याजीत राव	१७	५	३	३	५	१
२. विजयसार्थी	१३	३	२	३	२	३
३. ए. आर. जोशी	१२	२	२	२	४	२
४. बी.जे. मोहनी	११	३	२	१	३	२
५. नगेन्द्र	११	५	१	३	२	—
६. एस.के. गोगुली	१०	१	३	२	१	३
७. जे. रुबन	१०	५	१	१	३	—
८. ऐस. पान	९	२	३	२	१	१
९. जे.आर. पटेल	९	२	—	१	३	३
१०. मुहम्मद गौस	८	१	२	१	२	२
११. गोपाल कृष्णन	७	२	३	—	१	१
१२. रघुनाथ राव	७	२	१	१	१	२
१३. स्वरूप किशन	७	—	२	—	२	३
१४. एम.वी. गोथस्कर	६	२	१	—	१	२
१५. हनुमंत राव	६	१	२	—	२	१
१६. ए. एम. मामसा	६	३	१	१	१	—
१७. पी.आर. पंजाबी	६	—	२	—	२	२
१८. रामास्वामी	६	—	२	१	१	२
१९. एस राय	६	२	२	१	१	—
२०. मुहम्मद युनुस	५	१	१	१	२	—
२१. एन डी. नागरवाला	५	—	१	१	२	१
२२. एच.ई. चौधरी	४	२	२	—	—	—
२३. डी. देसाई	३	—	१	२	—	—
२४. जे.डी. घोष	३	१	१	—	१	—
२५. जे. डब्ल्यू हिच	३	३	—	—	—	—
२६. एच.पी. शर्मा	३	२	—	—	१	—
२७. शिव शंकरिया	३	१	—	१	१	—
२८. एस भट्टाचार्य	२	१	—	१	—	—

२९. एन.डी. सेन	२	—	२	—	—	—
३०. पी.के. सिन्हा	२	—	—	—	१	१
३१. एफ.ए. टैरेन्ट	२	२	—	—	—	—
३२. जी. आइलिंग	१	—	१	—	—	—
३३. एस.के. बैनर्जी	१	१	—	—	—	—
३४. जे.बी. हिगिंस	१	१	—	—	—	—
३५. एस. कुमार स्वामी	१	१	—	—	—	—
३६. एम नायडू	१	१	—	—	—	—
३७. डी.के. नायल	१	—	—	—	१	—
३८. वी. राजगोपाल	१	—	—	१	—	—
३९. टी.ए. रामचन्द्रन	१	—	—	—	१	—

पृष्ठ २६ से आगे

पूछा।

"इससे तुम्हें क्या मतलब ?" रूखे स्वर में कतिंका ने उत्तर दिया और आग तापती रही। उसे क्या पता, कि यही बूढ़ा उसे सेब दे सकता है !

इस पर बूढ़े जनवरी ने अपनी बर्फ़ीली चादर फैला दी और एक बर्फ़ीली आंधी बही। कतिंका उस आंधी में ऐसी खो गई, कि फिर किसी ने उसका नामो-निशान तक नहीं पाया।

यह घोर-प्रचंड आंधी उठती देखकर बुढ़िया अपनी प्यारी बेटी को ढूंढ़ने के लिए निकली और वह भी उसी आंधी में खो गई।

डोरबंका अब उस कुटिया में अकेली थी, पर शान्ति से रह रही थी। वह आनंदपूर्वक घर के काम-काज करती। कन्द-मूल-फल-फूल पर वह जीवन व्यतीत कर रही थी, कि एक दिन एक राजकुमार ने उसी रास्ते से गुज़रते हुए उसे देख लिया। चांद-से सुहाने मुखड़े ने उसे मंत्रमुग्ध कर दिया। डोरबंका को वह अपनी दुल्हन बनाने अपने राजमहल में ले गया। धूमधाम से विवाह हुआ और डोरबंका रानी बन गई। दोनों पति-पत्नी सूखपुर्वक रहने लगे।

समाप्त

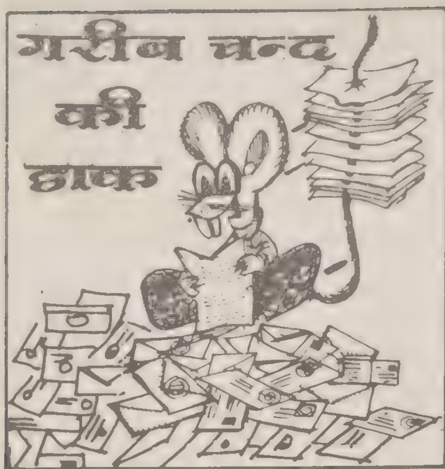
सवाल यह है?

मछली से मज़ाक कैसा रहा ?





 आगामी अंक में देखिये, कुछ और लाजवाब सवाल.



रमेश सुरेश—जनौली पलवल : गरीब डीयर, आपको अपनी नानी कब याद आती है ?

उ० : जब बिल्ली मौसी मिलने आती है।

सुरेशकुमार बुधवानी—रायपुर (म०प्र०) : गरीबचन्द जी, एक लड़की मुझे अपने घर की खिड़की से देखती रहती है। जब भी घर से निकलता हूँ उसकी निगाहें मेरी ओर रहती हैं।

उ० : लगता है आपने अपना तमाशा बना रखा है।

सलिल शर्मा—इन्द्रपुरी, दिल्ली : श्रीगरीबचंद जी, क्या १९८० में दुनिया खत्म हो जाएगी।

उ० आप चिन्ता न करें। खत्म होती गई तो ब्लैक में तो ज़रूर मिलेगी।

मुकेश भटनागर—चित्तौड़गढ़ (राज०) : गरीबचन्द जी आप कौनसी हिरोइन से शादी करना पसन्द करोगे और कितने बच्चे पैदा करोगे कृपया हमें भी तो बतायें ?

उ० : पहले आप बताइये कि आपने अपने लिये कौनसी हीरोइन सिलेक्ट कर रखी है ताकि मैं उसे छोड़ बाकियों में से कोई एक चुन लूँ।

श्याम कुमार उदासी—बैरागढ़ : डियर गरीबचन्द जी अगर आपके सामने बिल्ली आ जाय तो आप क्या करेंगे ?

उ० : महात्मा गांधी तथा अहिंसा जिन्दाबाद के नारे लगाना शुरू कर दूंगा।

तिलकराज अरोड़ा—खुरजा : डियर गरीबचन्द जी, नमस्कार। जिंदगी में सुख की अपेक्षा दुख अधिक है फिर भी मानव ज्यादा से ज्यादा क्यों जीना चाहता है ?

उ० : इंसान परीक्षा से डरता है। परीक्षा से बचने के लिये कुछ भी कर सकता है। विद्यार्थी परीक्षायें स्थगित कराने के लिये आंदोलन छेड़ते हैं। बुढ़ापा आने पर भी मौत को स्थगित करते रहते हैं क्योंकि यमराज के यहां भी तो अपने कर्मों के हिसाब का पेपर देना पड़ता है।

मोहन लाल शर्मा—करनाल : गरीब चन्द जी आप गायब होकर फिर पैदा कैसे हो जाते हैं ?

उ० : मेरे पड़ौस में दोनों ओर ब्लैकमार्केटिये रहते हैं। गायब होने तथा दोबारा प्रकट होने की विद्या उन्हीं से सीखी हुयी है।

अशोक कुमार वरदियानी 'शैतान'—धमतरी (म०प्र०) : गरीब चन्द जी, हमने सुना है कि आप चुनाव लड़ने वाले हैं। कृपया यह बताइये कि आप किस पार्टी की ओर से चुनाव लड़ेंगे ?

उ० : मैं इंडियन शैतान पार्टी की ओर से लड़ूंगा, मुझे टिकट दिलवा देना।

अजय कुमार अग्रवाल—काशीपुर, नैनीताल : गरीबचन्द तुम अमीरचन्द बनने के लिए नेता या अभिनेता क्यों नहीं बन जाते ? तुम तो दोनों फनों में माहिर हो भाई।

उ० : दो फनों में माहिर होने के कारण ही मार खा गया। कहावत भी है कि दो घरों तो का मेहमान भूखा रह जाता है।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

हेमा की टक्कर में रेखा और जीनत अमान

● विजय भारद्वाज

हेमा मालिनी का जन्म २४ अक्टूबर सन्, १९४८ को मद्रास में हुआ। दक्षिण से हेमा मालिनी को बम्बई लाने का श्रेय अनन्त स्वामी को है। उन्होंने सर्वप्रथम राजकपूर से हेमा को मिलवाया और स्वप्न सुन्दरी के नाम से राजकपूर ने सपनों का सौदागर में इनकी पब्लीसिटी की। देखते ही देखते हेमा मालिनी वास्तव में दर्शकों की रानी बन बैठी। आकर्षक रंग रूप और सौंदर्य की मलिका हेमा मालिनी से आज फिल्म वर्ग ही नहीं अपितु बच्चा बच्चा परिचित है।

पिछले कई वर्षों से यह नम्बर वन के स्थान पर विराजमान हैं जबकि अब रेखा और जीनत अमान दोनों ही अभिनेत्रियां इनकी टक्कर में आ खड़ी हुई हैं। यह माना जाता है कि जीनत ने लोकप्रियता अभिनय के बल पर कम अपितु नग्नता और अंग प्रदर्शन के बल पर अधिक प्राप्त की है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, शालीमार, अबदुल्ला, कुर्बानी में जीनत ने बेहद अंग प्रदर्शन किया लेकिन दूसरी अभिनेत्री पर यह इल्जाम नहीं लगाया जा सकता।

रेखा बेशक बिन्दास अभिनेत्री हैं लेकिन उनमें अभिनय क्षमता है और वह एक कुशल अभिनेत्री मानी जाती है। 'खूबसूरत' में नायिका की भोली भाली साधारण लड़की की भूमिका निभा कर रेखा हेमा की टक्कर में गिनी जाने लगी हैं।

हेमा मालिनी ने अब तक अपना स्थान सुरक्षित रखा है। नंबर वन के स्थान पर आसीन रही हैं लेकिन धर्मेन्द्र से विवाह करने के बाद हेमा मालिनी की लोकप्रियता को धक्का लगा है। फिल्मी क्षेत्र में ही नहीं अपितु हर वर्ग के व्यक्ति इस विवाह को अनुचित कह रहें हैं और हेमा और धर्मेन्द्र दोनों को ही कोस रहे हैं।

धर्मेन्द्र पूर्व विवाहित हैं वह अपनी पत्नी प्रकाश के साथ अपने तीन बच्चों को भी छोड़ हेमा के साथ रहने लगे हैं। वर्षों से चले आ रहे रोमांस को आखिर इन कलाकारों ने विवाह का नाम प्रदान कर ही दिया। इस विवाह को कराने में धर्मेन्द्र के पिता का हाथ है, हेमा की मां नहीं चाहती थीं कि यह विवाह हो। श्रीमती जया चक्रवती चाहती थीं कि जितेन्द्र, संजीव या गिरीश करनार्ड किसी से भी हेमा विवाह करे लेकिन बारी बारी हेमा ने इन सभी को ठुकरा दिया था।

यह सच है कि धर्मेन्द्र हेमा की जोड़ी या जो व्रत पहले था. वह अब नहीं रहा है। हेमा दिन प्रतिदिन लोकप्रियता खोती जा रही है। देखना अब यही बाकी रहा है कि यह कब तक रेखा और जीनत से अभिनय की दौड़ में मुकाबला करती है।

धर्मेन्द्र अब बुढ़ापे की तरफ अग्रसर हैं। पिछले दिनों एक फिल्म की डबिंग के अवसर पर धर्मेन्द्र ऐनक लगाये डबिंग थियेटर में बैठे डॉयलाग पढ़ते नज़र आये। शायद इसी कारण अब वह अपने बेटे अजय को हीरो बनाने की सोच रहे हैं और नई हीरोइन की भी तलाश कर रहे हैं। विशेष सूत्रों से पता चला है कि हेमा मालिनी नहीं चाहतीं कि अजय हीरो बने। इसी बात पर धर्म-हेमा में मनमुटाव भी होने की सम्भावना है।

जय हिन्द सोसाइटी
१२ वीं सड़क
जुहूपार्ले स्कीम
बम्बई

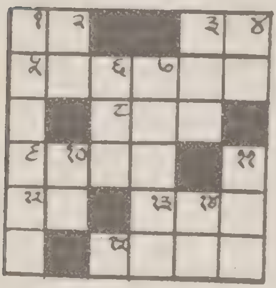

मालिनी
दीवाना

नया वर्ष
बहुत महंगा पड़ेगा
पुराने वर्ष
से ही काम चलाइये

दीवाना

वर्ग पहेली

इनाम १५ रू.



संकेत

बायें से दायें

१. दौड़ धूप करने की जरूरत नहीं । सच्चाई फुर्सत में ही मिलेगी । (२)
३. बोतल का उल्टा व्यसन ! (२)
५. अधिक खुशी के कारण धरती से सम्पर्क तोड़ना ? (२,१,३)
८. इलाके का कम भार ! (३)
९. कौनसा काम मकान पर चूना डलवायेगा ? (३,१)
१२. हाथ से काम ले ! (२)
१३. पॉकेट छाप घुंघरु ? (३)
१५. इन्कार के पश्चात होंठ का अर्थ ? (४)

ऊपर से नीचे

१. इस कमरे में विरह का काम नहीं है ! (४-२)
२. मितवा के पास रोटी बनाने का जुगाड़ ! (२)
३. झगड़े की संतान ? (३)
४. कितना खिंचा है टहनियों से नीचे ! (२)
६. काम न करना हो तो इसे लगालो हाथों में ? (३)
७. धरती पर आकाश से बाह्यपिंडों का गिरना ! (५)
१०. आखिरी दफे और पहली रस्सी घुमा ! (२)
११. सारे कारण उर्दू के ? (३)
१४. यहां से भागना अपराध है । (२)

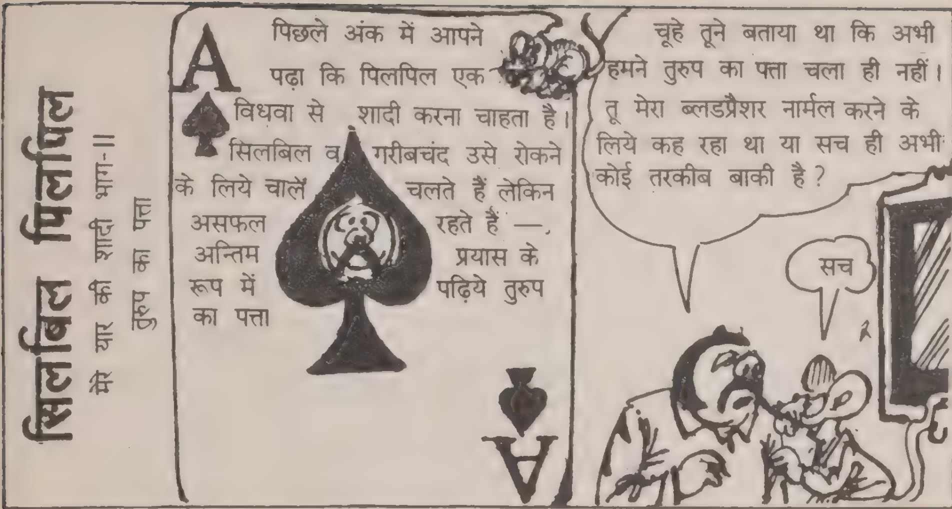
अन्तिम तिथि — २४-१-८१

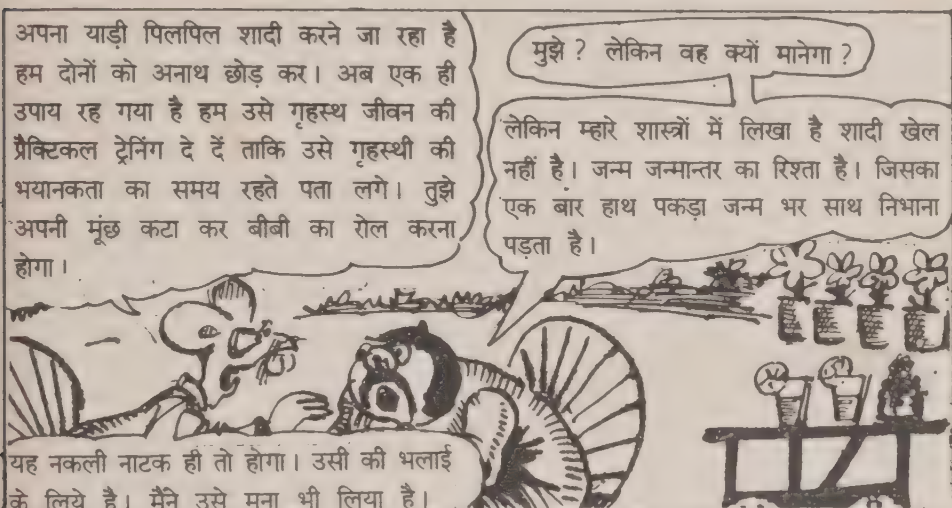
कविता शेर प्रतियोगिता इनाम ५रू.

हम चार लाइनों की कविता अथवा शेर के अन्तिम चार शब्द दे रहे हैं। आप इन शब्दों की तुकबन्दी के अनुसार कविता या शेर रच डालिए। सर्वश्रेष्ठ रचना को पुरस्कार—

गर्दन तोड़,
ओवर लोड,
कान फोड़,
माल रोड।

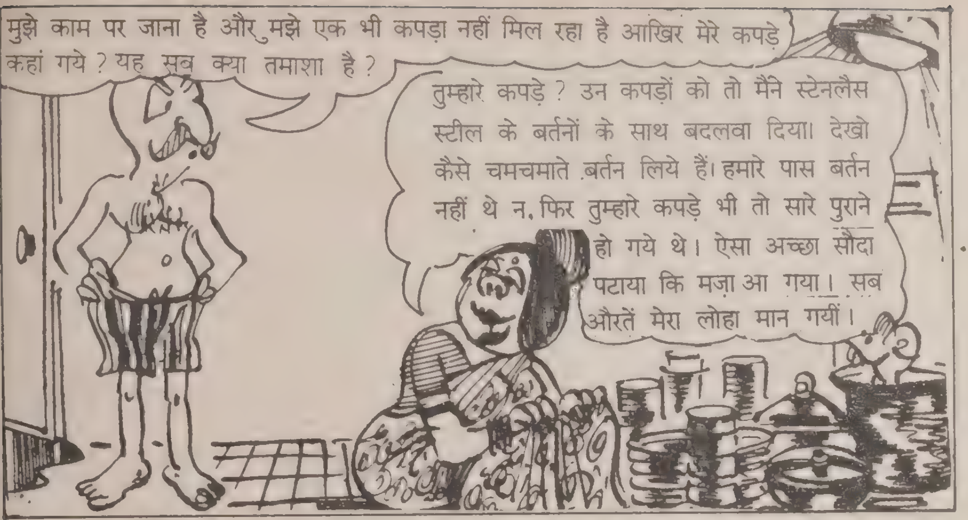
अन्तिम तिथि २४-१-८१.


सिलबिल पिलपिल
मेरे यार की शादी भाग-II
तुरुप का पत्ता
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि पिलपिल एक विधवा से शादी करना चाहता है। सिलबिल व गरीबचंद उसे रोकने के लिये चालें चलते हैं लेकिन असफल रहते हैं —, अन्तिम प्रयास के रूप में पढ़िये तुरुप का पत्ता
चूहे तूने बताया था कि अभी हमने तुरुप का पत्ता चला ही नहीं। तू मेरा ब्लडप्रैशर नार्मल करने के लिये कह रहा था या सच ही अभी कोई तरकीब बाकी है?
सच

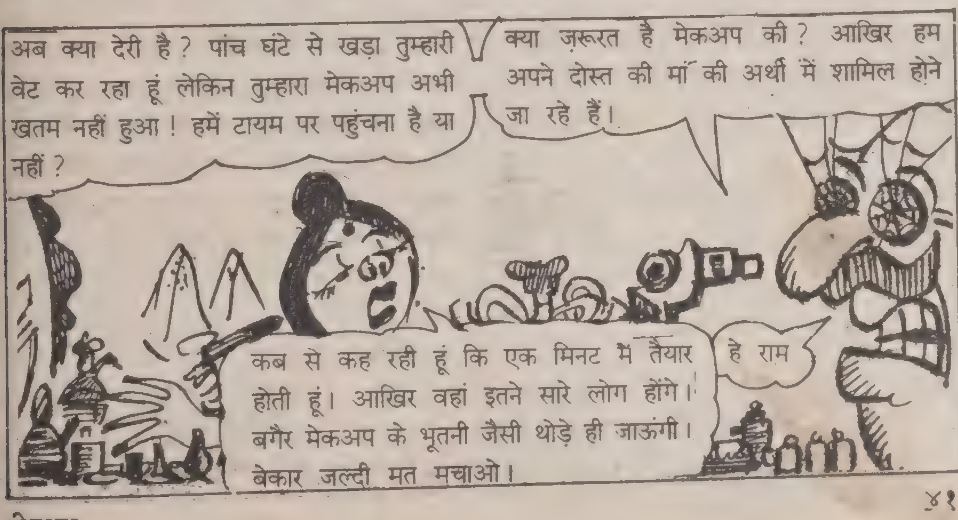

अपना याड़ी पिलपिल शादी करने जा रहा है हम दोनों को अनाथ छोड़ कर। अब एक ही उपाय रह गया है हम उसे गृहस्थ जीवन की प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दे दें ताकि उसे गृहस्थी की भयानकता का समय रहते पता लगे। तुझे अपनी मूंछ कटा कर बीबी का रोल करना होगा।
मुझे? लेकिन वह क्यों मानेगा?
लेकिन म्हारे शास्त्रों में लिखा है शादी खेल नहीं है। जन्म जन्मान्तर का रिश्ता है। जिसका एक बार हाथ पकड़ा जन्म भर साथ निभाना पड़ता है।
यह नकली नाटक ही तो होगा। उसी की भलाई के लिये है। मैने उसे मना भी लिया है।


देखोजी, शाम को घर लौटते वक्त ड्राइक्लीनर के यहां से कपड़े लेते आना। तुम्हें पता है ना कि कल मेरा माता हमबग देवी का बुधवार का व्रत है।उस के लिये कुकुरमुत्ता की जड़, बेरी के फल, धतूरे के बीज, काली गाय का गोबर,
मगरमच्छ के आंसू, मिश्री, आंवाला, कबूतर की चोंच और ऊंटनी का दूध ज़रूर ले आना। हम औरतें यह व्रत पति की सुख शांति के लिये करती हैं। अगर व्रत की सामग्री में जरा भी कमी रह गयी तो तुम कुबड़े हो जाओगे। शाम को जल्दी आना। मिट्टी तेल, चीनी, चावल और कोयला भी लाना है तुम्हें। घर में सब कुछ खत्म हो गया है।
शॉट-1


बहुत अच्छे ! तुम्हें इसी तरह पिलपिल का जीना हराम करना है। ध्यान रहे कि उसे सांस लेने की भी फुर्सत न मिले। बात-बात पर उसे काट खाने के लिये दौड़ना। कुछ ही दिनों में ऐसा प्रभाव पड़ना चाहिये कि वह तुम्हें देखते ही अधमरा हो जाये। उसकी मूंछों से टपटप पसीना टपकने लगे।
आज तुम फिर देर से लौटे हो ? पूरे तीन मिनट और तेंतीस सैकिंड लेट। मुझे पता है तुम कहां जाते हो ? तुम्हारा गंजा सिर देख कर मुझे पहले ही जान लेना चाहिये था तुम कैसे आदमी हो, क्यों कि चप्पलों से तुम्हारी खोपड़ी गंजी बनी होगी ?
सुना तुमने पड़ौस की लता वर्मा ने कल जो नया सैट लिया था न, वह आज टूट गया ! बड़ी शेखी मार रही थी, ऐसा टी सैट मुहल्ले में किसी के पास नहीं है। वह कैसी है मैं तो उसी दिन जान गयी थी जब मैं उससे जीरा उधार मांगने गयी थी। मैं एक दम ताड़ गयी कि उसने जो जेवर पहन रखे थे वह नकली थे। रोल्ड गोल्ड के होंगे। और वह शीला है न अपने आप को पता नहीं क्या समझती है ? कहती है हम तो हमेशा तड़का देसी घी का लगाते हैं।
मुझे अखबार पढ़ने दोगी तुम ?
यह कैसी दाल बना रखी है ? इसमें से मिट्टी तेल की बू आ रही है। पानी में मक्खी गिरी हुयी है। रोटियां इतनी कच्ची हैं जैसे ठंडे तवे पर बनी हैं और सब्जी को जला कर कोयला बना रखा है, अब तक धुंआ उठ रहा है।
हाये हाये ! ऐसी बात कहते तुम्हारे मुंह में कीड़े क्यों नहीं पड़ गये। हां हां तुम्हें मेरे हाथ की बनाई रोटी क्यों अच्छी लगेगी ? तुम्हें तो उस कलमुंही रीटा के हाथ की ही रोटियां चाहिये। होटल का खाना चाहिये। उसी के साथ गुलछर्रे उड़ाने थे तो मुझ से शादी क्यों की ? रोटी अच्छी नहीं। अभी सभी पड़ौस वालों को बुला कर तुम्हारी पोल खोल दूं ?


मुझे काम पर जाना है और मझे एक भी कपड़ा नहीं मिल रहा है आखिर मेरे कपड़े कहां गये? यह सब क्या तमाशा है?
तुम्हारे कपड़े? उन कपड़ों को तो मैंने स्टेनलैस स्टील के बर्तनों के साथ बदलवा दिया। देखो कैसे चमचमाते बर्तन लिये हैं। हमारे पास बर्तन नहीं थे न. फिर तुम्हारे कपड़े भी तो सारे पुराने हो गये थे। ऐसा अच्छा सौदा पटाया कि मज़ा आ गया। सब औरतें मेरा लोहा मान गयीं।


यह नहीं सोचा कि मैं क्या पहन कर बाहर जाऊंगा। क्या कच्छा पहन कर दफ्तर जाऊं? और यह क्या है?
यह लिस्ट है, दफ्तर से आते हुये यह सारा सामान ले आना, मेरे पास एक भी नयी साड़ी नहीं है। मेकअप का सामान खत्म है।
शैम्पू
बिल
बिल
पाउडर
लिपस्टिक


अब क्या देरी है? पांच घंटे से खड़ा तुम्हारी वेट कर रहा हूं लेकिन तुम्हारा मेकअप अभी खतम नहीं हुआ! हमें टायम पर पहुंचना है या नहीं?
क्या ज़रूरत है मेकअप की? आखिर हम अपने दोस्त की मां की अर्थी में शामिल होने जा रहे हैं।
कब से कह रही हूं कि एक मिनट में तैयार होती हूं। आखिर वहां इतने सारे लोग होंगे। बगैर मेकअप के भूतनी जैसी थोड़े ही जाऊंगी। बेकार जल्दी मत मचाओ।
हे राम



सुनो, आज शाम को मेरी माताजी आ रही हैं। मैंने ही उन्हें बुलाया था पत्र लिख कर, वह नींबू का अचार बहुत अच्छा डालती हैं। पांच छः महीने हमारे साथ रहकर ही जायेंगी।
नींबू का अचार डालने के लिये वह छः महीने रहेंगी यहां ?
जीते रहो बेटा। तुम्हारे सिर पर अभी तक भी एक बाल नहीं उगा ? कोई बात नहीं, मुझे आंवले का बाल पाक बनाना आता है, उससे बाल आ जायेंगे। आई तो छः महीने के लिये थी लेकिन अब लगता है कि बाल पाक के लिये छः महीने और रुकना पड़ेगा।
मैं गंजा ही ठीक हूं जी।
मां ठीक ही तो कह रही हैं।
आप जैसा कोई मेरी जिन्दगी में आये . . .तो बात बन जाये ऽऽऽऽऽ हां हां बात बन जाये।
पूंऽऽऽ
पूंऽऽऽ पूंऽऽऽ
पूंऽऽऽ
हां हां बात बन जायें . .
डार्लिंग तुम कई रोज से दिखाई ही नहीं दिये। परसों हमारी शादी है। मैं तुम्हारे पसंद की साड़ी पहनना चाहती हूं। आओ शापिंग करने चलें।
शादी ? कौन सी शादी और किस की शादी ?
डायमंडरिंग ? ऊ हू हू हू हू ! मैं किसी से शादी वादी के चक्कर में नहीं पड़ने वाला।
चूहे, तू सचमुच ही जीनियस है। तुझे तो अब तक नोबल प्राइज मिलना चाहिये था
कौन शादी, किसकी शादी ? यह तुम्हें क्या हो गया है ? चलो उठो मज़ाक अच्छा नहीं। तुम्हें भी तो मेरे लिये डायमंड वाली रिंग खरीदनी है न ?

पृष्ठ २३ से आगे

उसका स्वर अपरिचित तथा नीरस लग रहा था।

'कोई और ?' राजू मुंह लटका कर ऐसा बन रहा था मानों वह साधारण प्रश्न समझने में भी असमर्थ हो।

'हां, कोई और', तीन बिन्दू बोला, यदि हां तो मैं उन्हें भी देखना चाहता हूँ। मुझे जार्ज वाशिंगटन और बैंजमिन फ्रैंकलीन से अधिक अनोखी प्रतिमा चाहिये।'

'अब तो केवल यही हैं,' राजू ने उत्तर दिया, 'अन्य प्रतिमाएं तो बिक चुकी हैं।'

'तो इसका मतलब हुआ, प्रतिमाऐं और और भी थीं।' दिलचस्पी के कारण इस समय उसकी गहरी काली आँखों में चमक आ गई थी,' उनके क्या नाम थे बेटे ?'

'मुझे मालूम नहीं,' राजू ने सोचने की मुद्रा में आँखें बन्द कर लीं, 'अजीब से नाम थे जैसे होमर कोई, अगस्टस कहीं का इत्यादि इत्यादि।'

'वह ये सब क्यों बता रहा है ?' श्याम ने बहुत धीरे-धीरे से महिन्दर से पूछा।

'राजू के हर कदम में जरूर कुछ न कुछ मतलब होता है,' महिन्द्र ने फुसफुसा कर उत्तर दिया, 'ध्यान से सुनो।'

'अगस्टस' तीन बिन्दु का गम्भीर मुख एक क्षण के लिये चमक उठा। 'हां हां, मेरे ख्याल से मुझे अपने बाग में सजाने के लिये 'अगस्टस' चाहिये।

'तुम कह रहे थे वह बिक चुका है ?'

'कल ही बिका है,' राजू बोला।

'खरीदने वाले का नाम और पता तुम मुझे दे दो, उसने आशा भरे स्वर में कहा। मैं 'अगस्टस' वहीं से खरीद लूंगा।'

'हम खरीदने वालों का कोई रिकार्ड नहीं रखते, वह कोई भी व्यक्ति हो सकता है।'

'कोई···भी···हो···सकता···सकता···है तीन बिन्दू का स्वर फिर कठोर हो गया। 'देखता हूँ' बहुत ही दुर्भाग्य की बात है। यदि तुम मुझे उसका नाम और पता बता देते तो मैं एक हजार रुपये का इनाम तुम्हें खुशी से दे सकता था।'

'हम खरीदारों के पतों का रिकार्ड नहीं रखते,' राजू बेरुखी से बोला। यदि वह उसे वापिस ले आये, तो आप अवश्य उसे खरीद सकते हैं आप अपना नाम पता छोड़ना चाहेंगे ?'

'बड़ी चतुराई की बात है,' तीन बिन्दु ने राजू पर एक कठोर दृष्टि डाली, 'मैं ऐसा ही करता हूँ।'

अपनी छड़ी को बायीं कलाई पर लटका कर उसने अपनी जेब से एक कार्ड निकाला और पेंन्सिल से उस पर पता लिख कर राजू की ओर बढ़ाया।

'ये लो' वह बोला, 'मुझे फोन जरूर कर देना, 'अगस्टस' यदि वापिस आ गया, तो मैं तुम्हें उसके पूरे एक हजार रुपये दूंगा, तुम मुझे फोन करना भूलोगे तो नहीं ?'

मैं याद रखने का प्रयत्न करूंगा, राजू ने अनमने स्वर में उत्तर दिया।

'पक्का याद रखना' कहते हुए तीन बिन्दु ने अचानक अपनी छड़ी जमीन पर



शेष पृष्ठ ४८ पर

फिल्मी मैगज़ीन गाइड



लेखक-पंडित ऐलजेब्रानन्द

आप रोज ही बाजारों में दर्जनों फिल्मी पत्रिकायें देखते होंगे? क्या आपका दिल नहीं करता कि आप भी कोई फिल्मी पत्रिका निकालें ? आप इस गाइड की सहायता से आसानी से पत्रिका निकाल सकते हैं। हम आपको रहस्य की बात बताये दे रहे हैं–अगर दुनिया में सरसों का साग खाकर कमरे का वायुमंडल दूषित करने के बाद कोई और आसान काम है तो वह है फिल्मी मैगजीन छापना। जी हां ! यह बिलकुल सच है। फिल्मी ज्ञानकी गंगा बह रही है उसमें आप भी हाथ धोइये, डुबकी लगाइये और अपने सारे पाप धो डालिये। हमारा यह गाइड ध्रुवतारे की तरह आपको राह दिखाता चलेगा।



नामकरण

अब ज़रूरत पड़ेगी आपको फिल्मी पत्रिका के नाम की। यह तो तय है कि नाम का पहला भाग फिल्मी होगा, उससे आगे वाला सोचना होगा– जैसे फिल्मी तमंचा ... फिल्मी पटाखा . . .या फिल्मी चेहरे वगैरह। नाम ऐसा हो और नामों के बीच अलग से चमके। खूब सोचिये पानी पी-पी कर सोचिये, सिर के बल खड़े होकर सोचिये या मूंगफलियाँ चबा-चबा कर सोचिये। चित्र में दिखाये सज्जन को एक जोरदार आईडिया सूझा है। वे अपनी फिल्मी पत्रकिा का नाम "फिल्मी जूता" रखने वाले हैं।

पूंजी

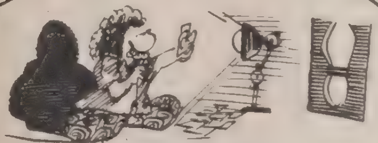
हर काम के लिये थोड़ी सी पूंजी तो चाहिये ही। इस काम के लिये भी आठ दस हजार रुपये तो अंटी में होने ही चाहिये, आपके पास भी होंगे। इतने रुपये तो आप के बाप-दादा छोड़ ही गये होंगे। नहीं ? खैर कोई बात नहीं, हमारे बाप-दादा भी कुछ नहीं छोड़ गये थे। इस तरह हम एक ही पार्टी के आदमी हो गये। आठ दस हज़ार खड़े करने के कई तरीके हैं, उनमें से एक है सिनेमा की टिकटों का ब्लैक करना। फिल्मी पत्रिका निकालने के लिये फिल्म उद्योग से ही पैदा किया पैसा लगे तो सोने पर सुहागा ! जिसका जूता उसी का सिर !





सम्पादक

अपनी पत्रिका के लिये आपको सम्पादक की ज़रूरत होगी। घबराइये मत। यह भी आसान काम है। अपने शहर की गलियों के चक्कर काटें, जिस गली में सबसे ज्यादा कूड़ा हो वहां के जमादार को पकड़ कर लाइये और सम्पादक की कुर्सी पर बिठा दीजिये। सच मानिये फिल्मी मैगजीन में जो छपता है वह कचरा ही होता है और कचरे की कद्र एक भंगी ही जान सकता है।



फोटू-शोटू

किसी अभिनेत्री का रंगीन कबर तथा बीच में सात फोटो ग्लेज़्ड पेपर पर फिल्मी मैगजीन की मांग का सिन्दूर है। आपको अपना फोटोग्राफर रखने की ज़रूरत नहीं। इस मैदान में कई प्रोफेशनल फोटोग्राफर हैं जो स्वयं आपको पारदर्शियों के पैकेट भेजेंगे। इन फोटोओं में कुछ ऐसे भद्दे, नग्न और अश्लील होंगे कि कोई भी शरीफ आदमी उन्हें देखना पसन्द नहीं करेगा। उन्हें अलग कीजिये। बाकी की अच्छी पारदर्शियों को सावधानी से पैकेट में बंद कर दीजिये और लौटा दीजिये—जो अलग किये थे उन्हें छापिये।



१. कालम के लेखक का नाम किसी महिला का दें जैसे, माधुरी, या युग छाया उर्वशी।
२. अब भांडे मांजने वाली ने जो बातें या कहानियां सुनाई हैं उनके पात्रों के नामों को फिल्म स्टारों के नामों से बदल लें।





फिल्म स्टार से इन्टरव्यु

एक फिल्म स्टार से हर अंक में लम्बा चौड़ा इन्टरव्यू होना ज़रूरी है, जिसमें वह अपनी सारी वह बातें जो अपनी मां से भी नहीं बताता आपके संवाददाता को बतायेगा। ऐसा संवाददाता आपको कहां मिलेगा? आप सीधे चन्डू खाने जाकर वहां से उस अफीमची को पकड़ लाइये जिसकी आंखें सबसे ज्यादा पथराई हों।

गरम-मसाला

फिल्मी मैगेजीन में अफवाहों और गपशप का कॉलम सबसे लोकप्रिय होता है। यह कालम कैसे जन्म लेता है? आप अपने घर में एक ऐसी भांडे मांजने वाली को रखिये जो पास पड़ौस के घरों की बातें विस्तार से आपको बताये। उसकी हर बात ध्यान से नोट करें। याद रखिये कि यही आपके गरम मसाला कॉलम का रॉ मैटीरियल यानि कच्चा माल है।



आप अपने दफ़्तर के एंक छोटा से कैबिन में चारों दीवारों पर फिल्म स्टारों के लाइफ साइज चित्र सजायें और इसी कमरे में उसे बिठा कर अफीम की अंटी दे दें। अफीम की पीनक के नशे में वह बड़े रंगीन इन्टरव्यू लेकर आयेगा सपनों की दुनिया से। वही छाप दीजिये।

सवाल आपके-जवाब हमारे

पत्रिका का एक मुख्य कॉलम प्रश्नोत्तर का होता है जिसमें पाठकों के बेढब प्रश्नों के उत्तर दिये जाते हैं। इस काम के लिये ऐसे सड़ियल दिमाग का व्यक्ति चुनें जिसने कभी परीक्षा में किसी प्रश्न का उत्तर न दिया हो। शेखचिल्ली के खानदान का वारिस मिले तो अच्छा, वर्ना उनमें से किसी एक से काम चल जायेगा जिस ने दूरदर्शन के प्रश्नमंच कार्यक्रम में भाग लिया हो।

रोहतक से झाऊंजी पूछते हैं- पुरुष कमजोर हो जाये तो वह मरियल हो जाता है, नारी कमजोर हो तो ?



नारी कमजोर हो जाये तो . . . ?
नारियल !



ऐसा सड़ा आदमी ही आपके काम के योग्य है।





मुक्दमा बनाम टीनामुनीम

क्या यह सच नहीं है कि टीना मुनीम के पेट में कीड़े हैं? वह शूटिंग के दौरान दूसरों के टिफिन कैरियर से खाना चुरा कर खा जाती हैं। टीना मुनीम ने देवानन्द से गन्धर्व विवाह कर रखा है। पिंगलवाड़े में पलने वाले ग्यारह बच्चे इन्हीं दोनों के हैं। उन मासूमों को किस बात की सजा दी जा रही है? टीना के साथ कैसा सलूक होना चाहिये ?

फिल्मी मुकदमा

फिल्मी पत्रिका में एक फीचर किसी एक स्टार की मिट्टी पलीद करने का भी होता है। इस काम के लिये किसी ऐसे शख्स की तलाश करें जो दुनिया से तंग आ गया हो, जिसकी प्रेमिका ने कहीं और शादी की हो, परीक्षा से नकल न करने पर भी निकाल दिया गया हो, झूठे मुकदमों में जेल जा चुका हो। गली के कुत्ते भी जिसे काटने दौड़ते हों। ऐसे आदमी हमारे देश में हर तीसरे मकान में मिलेंगे जो बरसों से सिफारिश न होने के कारण बेकार बैठे हों।

सुपर पत्रकार

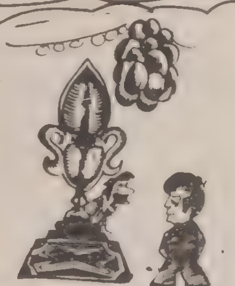


आप अपनी पत्रिका में एक ऐसे सुपर पत्रकार की रचना करें जिसकी बातों से ऐसा लगे जैसे सारी फिल्मी हस्तियां इस शख्स के इतने नजदीक हैं कि अपने सारे दुखड़े उसी के कंधे पर रख कर रोते हों। उसका नाम हमदर्द या यात्री या कुछ ऐसा ही रहस्यमय रखें। यह शख्स उतना ही काल्पनिक होगा जितना टार्जन या मैन्ड्रेक। यह आपके दिमाग की उपज होगी। शराब का अद्धा चढ़ा कर यह कॉलम आप खुद ही लिख डालिये। फिल्मी हस्तियों को बच्चा समझें और खुद को उनका मामा।

समीक्षा

पत्रिका में फिल्मों की समीक्षा भी होनी चाहिये फिल्मों के प्रेस शो पर आपकी जैसी खातिर डिस्ट्रीब्यूटर करे उसी अनुसार समीक्षा लिखें। स्कॉच विहस्की मिलने पर अभूतपूर्व फिल्म, चाय व काजू, पनीर मिलने पर उत्तम और घटिया चाय व बासी पकौड़े मिलने पर बेकार व अलजलूल फिल्म का फतवा।





आम के आम गुठलियों के दाम

कई ऐसे फिल्म स्टार होते हैं जिन्हें फिल्म फेयर पुरस्कार न मिलने पर बड़ी खीज होती है। वे सोचते हैं पुरस्कार उन्हें मिलना चाहिये था। ऐसे स्टारों को फोन करें। सौदा पटने पर उन खीजे स्टारों को अपनी पत्रिका द्वारा नकली आयोजन कर पुरस्कार की घोषणा करें और शानदार समारोह में पुरस्कार दें। आपका कुछ नहीं जायेगा। इस ड्रामे का सारा खर्च वह स्टार देते हैं, इतना कि तमाशा खत्म होने पर आपकी अंटी में भी लाख पचास हजार रुपया बचेगा। बेटा, पैसे कमा बाकी दुनिया में सब झूठ है।

अगले अंक में
इमरान व जीनत अमान की
शादी

के फोटो व पूरा विवरण ! अपनी कापी आज ही सुरक्षित करें।

(अगले अंक के लिये ऐसी ही सनसनेखेज घोषणा करें। अगले अंक की सेल बढ़ेगी। अगले अंक में सूचना छापें कि किसी कारणवश घोषित आर्टिकल नहीं छप सका ! खेद है। कोई आपका या हमारा क्या बिगाड़ लेगा ?

पृष्ठ ४३से आगे

पटकी।

'ये कागज का टुकड़ा' वह बोला 'मुझे सफाई पसन्द है,' तीन बिन्दु ने धरती पर से कागज का पड़ा टुकड़ा अपनी छड़ी की नोक से जो कि तलवार की १२ इंच के फल की नोक थी, से उठाकर राजू की ओर बढ़ाया।

तीन बिन्दु के हाथ में पकड़ी तलवार की अति तीखी नोक राजू की छाती से कुछ ही इंच की दूर पर थी। गस महिन्दर और श्याम तीनों घबरा से गये। धीरे से आगे राजू ने कागज के टुकड़े को तलवार की नोक पर से निकाल लिया।

फिर पहले की भांति एक झटके में तीन बिन्दु ने तलवार का फल छड़ी के भीतर कर लिया और तलवार फिर छड़ी की छड़ी ही बन गई।

'मैं तुम्हें दोबारा फोन करूँगा,' उसने तीखे स्वर में कहा,' परन्तु यदि इसके बीच अगस्टस की प्रतिमा वापिस आ जाये, तो तुम मुझे फोन करना न भूलना।'

यह कह कर वह मुड़ा और तुरन्त कार में बैठकर चला गया।

अजीब परिणाम

राजू कार के गेट से बाहर जाने की प्रतीक्षा करता रहा, फिर वह मुड़ा, उसका रंग उड़ा हुआ था।

इस व्यक्ति के साथ असावधानी नहीं बरती जा सकती महिन्दर ने तुरन्त कहा, 'राजू मैं तो समझा था कि वह तुम्हें छुरा मार देगा।'

'नहीं, वह मुझे चेतावनी दे रहा था; 'थूक सटकते हुए राजू बोला, वह मुझे बताना चाहता था कि उसके साथ चालाकी करके कोइ बच न पायेगा।'

'मेरे ख्याल में ये वही व्यक्ति है, जो दस वर्ष पूर्व मेरे पिता के पास पूछताछ करने आया था, इसकी चाल ढाल से भी पता चलता है ये किसी दूर पूर्वीय क्षेत्र का है, हो सकता है चीन का ही हो। तीन बिन्दु किसी विशेष धर्म वालों का चिन्ह हो सकता है 'गस' बोला

'तुमने उसे आखिर ये क्यों बताया कि प्रतिमाओं में एक अगस्टस आफ पोलेंड की

शेष पृष्ठ ५४ पर





फैण्टम -जंगल शहर
मशीनगन की आवाजें जरूर वो लोगों को मार रहे हैं।
बूम !
'केप' तुमने 'जोको' को क्यों मारा? वो ही तो जानता था कि इस जंगल में और सोना कहां छिपा है"?
'तारपीडो हमारे पास सोना काफी है अब हमें पैट्रोल की जरूरत है। हम जल्दी से बाहर जायेंगे।
खूँखार कुत्ते अपने लोगों को ही मार रहे हैं।
'डाकू' भाग रहे हैं।
नीचे पड़ी वो बन्दूक लाओ, हो सकता है हम उन्हें रोक लें।
वो 'जोकों की बन्दूक उठा रहे हैं।
!!
गोली चलाते रहो। उन्हें आगे न आने दो जब तक हम यहां से उड़ न जायें।
'धड़ाम'
और गोलियाँ चलीं।
'केप' इस बक्से को उपर चढ़ाओ।
सोना भारी है धीरे धीरे चढ़ाया जाता है। तारपीडो गोली चलाये जाओ'।
उन्हें 'जोको' की बन्दूक के पास न आने दो। जैसे ही हम दीवार पार कर लेंगे हम सुरक्षित हो जायेंगे।
मैंने रोका हुआ है कैसे चल रहा है केप'
बहुत बढ़िया ! हम करीब करीब दीवार के पार होने वाले हैं।
लो हम चले
हम ने काम कर लिया।


मारने वाले वायबीज़ गांव से उड़ जाते हैं . . . एक के साथ !
FALK & BARRY 8/6
'केप' वह झटका कैसा लगा !
दीवार के ऊपर हो सकता है हवा का तेज झोंका था !
!
!
!
ओह ! सोना, असली सोना, सारा हमारा !
© 1979 King Features Syndicate Inc. World rights reserved
'केप' उस बक्स पर वे कैसे चिन्ह हैं जिनके विषय में जोको बक रहा था ?
जंगल की कथा है कि फैन्टम इनकी रक्षा करता है।
फैन्टम के अच्छे चिन्ह हैं !
'केप' देखो नीचे कितने कस्बे हैं, उन सब में सोना है ? मुझे विश्वास है !
यहां से जाना निरी मूर्खता है।
हम फिर आ सकते हैं हमारे पास काफ़ी सोना है, परन्तु पेट्रोल नहीं है।
FALK & BARRY 8/7
'केप', क्या ख्याल है एक बार और सोन के लिये रुक जाते हैं ?
नहीं ! तारपीड़ो चाहे कुछ भी सामने आ जाये, एक बार चल कर मैं रुकता नहीं !
इस ओर झुकाव सा महसूस हो रहा है।
जैसे सोना लदा है उससे फिकर की कोई बात नहीं है।
चिन्ता की कोई बात नहीं।
उड़ने की अपनी जल्दी में ये लोग सामान का दरवाजा बन्द करना भूल गये हैं।
'केप' जंगल से बाहर निकलने के लिये हमारे पास काफ़ी गैस है ना ?
ऐसी ही उम्मीद करो !
हैं, हवा का तेज़ झोंका महसूस हुआ ?
सामान वाला दरवाजा खुल गया लगता है तारपीड़ो देखो तो !


जाओ तारपीड़ो उस दरवाजे को बन्द करो !
कोई जल्दी नहीं है केप ! मुझ से छुटकारा पाना चाहते हो !
तुम क्या बात कर रहे हो !
हम शुरू में चार थे ! बो और जोको खत्म हुए, मैं और तुम रह गये।
मेरे जाते ही तुम सारे सोने के मालिक हो जाओगे केप ! तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं है।
परन्तु मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, इस डिब्बे को उड़ाने के लिये।
FALK & BARRY 8/10
पागल न बनो तारपीडो; सामान वाला दरवाजा खुला है, यदि तेज हवा अन्दर आ गई तो सोना बिखर जायेगा।
कम्बख़्त, मेरे मुड़ते ही तुम मुझे गोली मार दोगे।
FALK & BARRY 8/11
जब तक हम उतरेंगे नहीं मैं यहां से हिलूँगा नहीं।
आह !
क्या बात है ?
तारपीडो क्या हुआ ?
मुझे किसी ने मारा है !
तुम क्या बात कर रहे हो ?
FALK & BARRY 8/13
आह . . . . .
??!!
तारपीडो चालाकी न करो !
'केप' बचाओ
मज़ाक छोड़ो 'तारपी-डो', तुम मेरा बेवकूफ नहीं बना सकते !
ऊंह . . . .

क्रमशः

दीवाना फ्रेंड्स क्लब



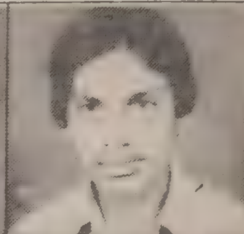
कमल किशोर चोपरा, आर ३/३ पुलिस किंग्जवे कैम्प स्टेशन दिल्ली-३३, २२ साल, गाने सुनना, डियाना से खेलना।



अनिल कुमार, ए ३ न्यू मुलतान नगर दिल्ली-११०००५७, २० साल, क्रिकेट खेलना, बैडमिन्टन खेलना।



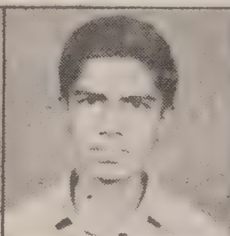
नरेश कुमार ठाकुर, एफ. ४७८, करम पुरा नजफगढ़ रोड़ दिल्ली-१५,२५ साल, प्यार करना, पढ़ाई करना, व दोस्ती करना।



प्रवीण कुमार गुप्ता, ३१३/५७ - जे आनन्द नगर, नई दिल्ली - ३५. १८ वर्ष, शतरंज का दीवाना, हवाई किले बनाना।



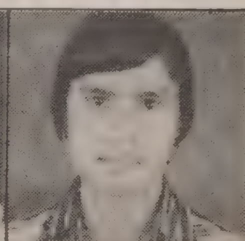
नरेन्द्र कुमार शर्मा, बर्मा न्यूज एजेंसी रोड़ वेज बस स्टैन्ड काशीपुर नैनीताल,१८ वर्ष, उपन्यास पढ़ना, दोस्ती करना।



संजय अग्रवाल, सैनी भवन नीमच, १२ वर्ष, किताबें पढ़ना व सायकिल पर घूमना।



निर्मल कुमार मंगवानी, सिंधी कालोनी खण्डवा, १४ वर्ष, गप्पें मारना, दीवाना पढ़ना।



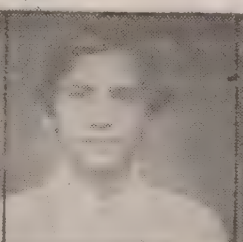
लखमी चंद जैन 'गोदरे', बालचंद जैन, साथी प्रकाशन के पास, सागर, १७ वर्ष, घूमना, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता।



धर्मेन्द्र सिंह राजपूत, सी.टी.आई. (पोली.) ग्वालियर (म.प्र.), १२ वर्ष, पढ़ना, लड़कियों को देख कर नजरें झुकालेना, दीवाना पढ़ना।



सुरेश रामचन्द तरानी, भवानी वाला हाउस डी-४५, गांधी नगर, १७ वर्ष, फिल्म देखना दीवाना पढ़ना।



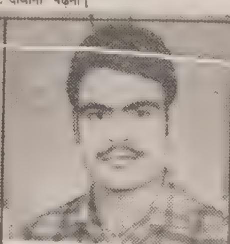
अमरदीप बाजपेई, C/O बसीधर बाजपेई, मु.पो. घाटजी, जि. यवतमाल ४०५३०७, १६ वर्ष, पुराने गीत सुनना।



दिनेश मैन्दी रत्ता, संगरिया, (राज०) ३३५०६३, २० वर्ष, तैरना पढ़ना, पत्र मित्रता।



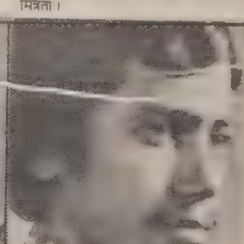
अशोक रत्न, c/o श्री बिमल कुमार बर्मा, पोस्ट बॉक्स नं. मुजफ्फरपुर, १८ वर्ष, मित्रता, क्रिकेट, दीवाना पढ़ना।



गोविन्द सिंह राठौड़, S/o दीप सिंह टी०टी०ई० रेलेवे स्टेशन रतनगढ़, २३ वर्ष, वास्केट बाल व क्रिकेट खेलना।



हरीश कुमार "रोमू", c/o सरगोधा पान भंडार, जी. टी. रोड़, शाहाबाद(म०), १७ वर्ष, पत्र-मैत्री, मस्त रहना।



दीन दयाल शर्मा, रेलवे क्वार्टर्स नं एल-२/यू, बीकानेर, २० वर्ष, कार्टून बनाना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



मनजीत राय तनेजा, फिसयत बस स्टैंड, गिदड़बाहा, (फरीदकोट) (पंजाब), १९ वर्ष, दीवाना पढ़ना, रेडियो सुनना।



राकेश कटारीआ, कृष्णा गली नं:१, कोट कपूर, १५ वर्ष, दूसरों को पीटना,व बोर करना।



प्रभुलाल कानजी,फुलतरीया, पोस्टः नरहारी वाया - मोरजी - ३६३६४२, २२ वर्ष, स्टैम्प कलेक्शन, क्रिकेट।



राजेश कुमार सैन, श्री राम स्वरुप (ए.पी.एम.) खिरनी गैट, अलीगढ़, १४ वर्ष, खासतौर पर दीवाना पढ़ना।



खेम चन्द्र झा, १९६, अंदर दरिया गेट, झाँसी, १८ वर्ष, पत्रमित्रता, रेडियो सुनना। हँसना और हँसाना।



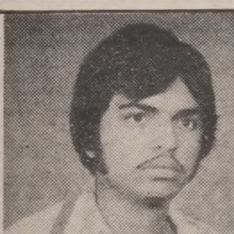
रामबाबू गुप्त, मुहल्ला मंडी लाल गंज, रायबरेली (उ०प्र०),१६ वर्ष, मित्र बनाना, प्रेम करना।



महेश चन्द्र वर्मा, न्यूज पेपर एजेन्ट, ग्रा. पो. मसवासा, जि. रामपुर,२० वर्ष, दीवाना पढ़ना



रविन्द्र नागपाल, २५४, मोहल्ला कलाँ, सोनीपत (हरियाणा), १९ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना



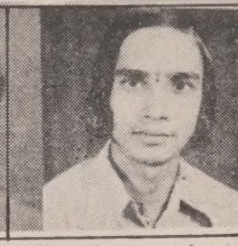
गजेन्द्र कुमार केडिया, शीबनीवास मानलेवुडी रोड, अमराबनी, ४४४६०१, १७ वर्ष, लड़के और लड़कियों से पत्र मित्रता



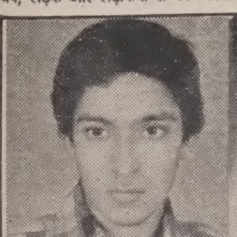
भरत कुमार मानसाता,स्टेशन गंज नरसिंह पुर, (म०प्र०), १६वर्ष, क्रिकेट खेलना। पत्र मित्रता करना आदि।



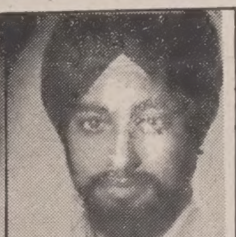
लेखराज शर्मा 'मतवाला', स्वपन गली, खुल्लर हाऊस, समर हिल, शिमला - १७१००५, ३०वर्ष, पत्र मित्रता



एस. पी. भट्टराई, अगम्य - झुपड़ी, भावना, पुञ्ज श्री पशु पौत नाथ का मन्दिर, २० वर्ष,लेखन, भ्रमण, समाज सेवा।



कृष्ण गोपाल अरोरा, मकान न० ११२/ए. गांधी कालौनी, विष्णु दल क्वार्टर के पास, मुजफ्फर नगर (उ०प्र०), फिल्में देखना आदि।



अमृत अरोड़ा, हिना सेल्स, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़ १५,.२५ वर्ष, पत्रिकायें पढ़ना.

हमारा पताः दीवाना फ्रैंड्स क्लब ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

पता ____________________

____

आयु ______ शौक ____________________

तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

पृष्ठ ४८से आगे

प्रतिमा भी थी, महिन्दर ने प्रश्न किया–'उसका नाम सुन वह एक दम उत्तेजित हो गया था।'

उसे प्रतिमाओं के विषय में मालूम था, राजू ने कंम्पा कोला की घूंट सटकते हुए कहा। 'मैं ये देखना चाहता था कि उसे अगस्टक की प्लास्टर प्रतिमा में कोई रुचि है या नहीं, ये बिल्कुल साफ पता चल गया कि उसे केवल वही प्रतिमा चाहिये। हो सकता है संदेश की नकल मि० दूबे के घर से इसीने चुराई हो।

"इसकी तो काली मूँछें नहीं हैं न ही इसने चश्मा लगा रखा है।' गस ने ऐतराज किया।

"हो सकता है इसने किसी से संदेश चुरवाया हो", श्याम ने कहा, "कुछ भी हो, उसे ये पता था कि अगस्टस की प्रतिमा महत्त्वपूर्ण है"।

वह तो और पता लगाने की कोशिश कर रहा था, राजू बोला, "वही मैं भी कर रहा था, मैंने तरकीब से उसका नाम व पता लिखवा लिया"।

उसने तीन बिन्दु द्वारा दिया गया कार्ड डेस्क पर रक्खा, उस पर छपा था।

रामा सिदरी राणाधुर

पलशीवार, भारत

उसी के नीचे उसने बम्बई के एक मोटर होटल का पता लिखा हुआ है।



'भारत' महिन्दर ने कहा, श्याम का विचार ठीक ही था परन्तु यदि तीन बिन्दु भारत के किसी सनकी धार्मिक गिरोह का चिन्ह है तो 'चमकती आँख' किसे चाहिये। बेहतर होगा हम उसे भूल ही जायें। मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था की वहाँ के एक विशेष क़बीले के लोग अपने धर्म सम्बन्धी कुछ प्राचीन वस्तुऐं एकत्रित कर रहे हैं। वो बहुत ही ख़तरनाक है। तथा किसी को देख कर ही भस्म कर देने की शक्ति भी उनमें समझी जाती है"। उस मनुष्य की तीखी दृष्टि तो भुलाये नहीं भूलती।

"अभी तक तो हम केवल अटकलबाज़ी कर रहे हैं। श्याम अब कुछ खोज़ करने का समय आ गया है।"

"ठीक, परन्तु कैसी खोज़?"

लाइब्रेरी में जा कर देखो किसी पुस्तक में, "चमकती आँख" के विषय में कुछ लिखा है तो पता लगाओ। 'इसके अतिरिक्त भारत के नक्शे पर पलशीवार को भी ढूढ़ों।'

'अच्छा,' श्याम बोला, 'यदि मैं रात के खाने के बाद आ कर बताऊँ तो चलेगा क्योंकि कभी कभी रात का खाना घर पर खाना भी अच्छा है, घर वाले इन्तज़ार करते हैं।'

वह समय ठीक रहेगा, उसी समय हम भूत भूत का सम्पर्क स्थापित करना भी आरम्भ करेंगे।

अरे भगवान्! श्याम को घर की ओर साइकिल पर जाते देख गस बोला, "मुझे इस बात का बिलकुल पता नहीं था कि मैं तुम्हें किस मुसीबत में डाल रहा हूं। कोई मि० दूबे पर आक्रमण करता है, तीन बिन्दू यहाँ आकर तुम्हें चेतावनी देता है, राजू मुझे डर है कि इस काम में काफ़ी ख़तरा और मुसीबत है। मुझे तुम्हारा जीवन ख़तरे में डालने का कोई अधिकार नहीं है। मैं समझता हूं मैं घर वापिस जा कर चमकती आंख को भूल जाता हूं। तुम 'चमकती आंख' ढूंढ़ने का प्रयास बन्द कर दो. और अगस्टस को प्रतिमा का पता लगाने को छोड़ो। यदि काली मूँछोंवाला या तीन बिन्दु उसे ढूंढ़ लेते हैं तो उन्हें ही आपस में फैसला करने दो।

क्रमशः


न्यू बैंक की
परिवार के प्रत्येक सदस्य
हेतु स्वर्णिम योजना
बचत खाता
अपने मासिक बजट से बचायें और जब जरूरत हो तो चेक द्वारा निकालें. 5% का ब्याज कमायें
पुनः विनियोजन निवेश योजना
आपकी जमा 87 माह में दुगनी हो जाती है आपकी बचत विवाह, शिक्षा, भवन निर्माण अथवा यात्रा के काम आ सकती है
जनता निवेश योजना
वेतनभोगियों के लिए आदर्श. कोई नियमित बचत रु. 5/- के गुणकों में 12 माह से 120 माह हेतु 7% से 10% तक का ब्याज अर्जित करती है
लोकप्रिय निवेश योजना
63 से 120 की निवेश पर मासिक ब्याज मिलता है
रु. 10,000/- के निवेश पर आपको रु. 82.64 प्रति माह मिलेगा.
सावधि निवेश
उन लोगों के लिए आदर्श जिन पर बचाने को एकमुश्त राशि है 10% प्रति वर्ष तक ब्याज कमायें
NEW BANK OF INDIA
SERVICE WITH A SMILE
न्यू बैंक आफ इण्डिया
(भारत सरकार का संस्थान)

Regd. No. D(DN)-275

